प्रयागराज, रविवार 05 जुलाई 2026 से 11 जुलाई 2026 तक
वर्ष-14, अंक-27
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये
आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

ईरान में खामेनेई का अंतिम संस्कार बीती शाम को हुआ शुरू, 14 महीने की पोती का ताबूत भी रखा गया,श्रद्धांजलि देने आए राष्ट्रपति पजशकियान रो पड़े

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई और उनके परिवार के सदस्यों की अंतिम विदाई की रस्में शुरू हो गई हैं। खामेनेई के साथ उनकी 14 महीने की पोती, पत्नी, बेटी और दामाद को भी श्रद्धांजलि दी जा रही है। खामेनेई की पोती के छोटे से ताबूत के पास उसकी तस्वीर भी रखी गई है। तेहरान के मोसल्ला परिसर में अली खामेनेई और उनके परिवार के कई सदस्यों के ताबूत रखे गए हैं। ईरानी राष्ट्रपति मसूद पजशकियान समेत देश का शीर्ष नेतृत्व तेहरान के ग्रैंड मोसल्ला में खामेनेई को श्रद्धांजलि देने पहुंचा। इस दौरान पजशकियान भावुक होकर रो पड़े। उनके साथ मौजूद कई ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघेर गालिबाफ और कई सैन्य अधिकारी भी अपने आंसू नहीं रोक सके। खामेनेई और उनके परिवार के सदस्यों की 28 फरवरी को अमेरिका-इजराइल के संयुक्त हवाई हमले में मौत हो गई थी। 131 दिन बाद, 9 जुलाई को उन्हें ईरान के मशहद शहर में सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स:-1. अमेरिका-ईरान में अगली वार्ता खामेनेई के अंतिम संस्कार के बादः दोहा में हुई बातचीत के बाद कतर ने बताया कि दोनों पक्ष पूर्व सुप्रीम लीडर के अंतिम संस्कार के बाद जल्द अगले दौर की वार्ता करेंगे। 2. यूएन पहुंचा ईरान-इजराइल विवादः ईरान ने इजराइल पर सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई को धमकी देने का आरोप लगाते हुए संयुक्त राष्ट्र में शिकायत दर्ज कराई। 3. ईरान हाई अलर्ट पर, 2 करोड़ लोगों के पहुंचने का दावाः ईरान ने खामेनेई के अंतिम संस्कार से पहले सेना की तैनाती बढ़ी। कार्यक्रम में 30 देशों के प्रतिनिधि और करीब 2 करोड़ लोग शामिल होंगे।4. होर्मुज पर ईरान की अमेरिका को चेतावनीः ईरान ने कहा है कि होर्मुज हमारा इलाका है, अमेरिकी दखल बर्दाश्त नहीं करेंगे। सभी जहाजों को तय समुद्री मार्ग अपनाने को कहा। 5. ईरान ने आईएईए को परमाणु ठिकानों की जांच से रोकाः ईरान ने कहा है कि फोर्डो, नतांज और इस्फहान परमाणु साइट्स पर आईएईए के निरीक्षकों को एंट्री नहीं मिलेगी। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में देश के कई टॉप नेता शामिल हुए।मोहम्मद बाघेर गालिबाफः ईरान की संसद के अध्यक्ष हैं। उन्होंने पिछले महीने अमेरिका के साथ अंतरिम समझौते तक पहुंचने वाली वार्ता में अहम भूमिका निभाई थी। राष्ट्रपति मसूद पजशकियानः युद्ध और राजनीतिक संकट के कठिन दौर में भी वे सत्ता में बने रहे। दबाव और विरोध के बावजूद आम लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। विदेश मंत्री अब्बास अराघचीः ईरान के सबसे मुखर नेताओं में से एक हैं। वे अमेरिका के साथ बातचीत करने वाली ईरानी टीम के प्रमुख सदस्यों में शामिल रहे हैं।

यूएन ऑफिस के बाहर आग लगाकर जान दी,बौद्ध भिक्षु के वेष में था व्यक्ति,पर्चे मिले- लिखा था- चीन को तिब्बत से निकालो

न्यूयॉर्क सिटी। अमेरिका के न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मुख्यालय के बाहर गुरुवार को एक 52 साल के व्यक्ति ने खुद को आग लगा ली। उसके हाथ में तिब्बती झंडा था। सूचना मिलने पर पुलिस और इमरजेंसी टीम मौके पर पहुंची। गंभीर रूप से झुलसे व्यक्ति को अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। न्यूयॉर्क पुलिस विभाग (एनवाईपीडी) ने बताया कि फिलहाल यह साफ नहीं है कि व्यक्ति ने यह कदम क्यों उठाया। मामले की जांच की जा रही है। मृतक की पहचान अभी सार्वजनिक नहीं की गई है, क्योंकि उसके परिजन को पहले सूचना दी जानी है। संयुक्त राष्ट्र के प्रवक्ता ने बताया कि घटना के वक्त सभी आधिकारिक बैठकें खत्म हो चुकी थीं। इसलिए यूएन के नियमित कामकाज पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। 20 साल से अमेरिका में रह रहा था शख्सः-कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, मृतक की पहचान उसके एक दोस्त ने लोबगा रांगजेन के रूप में की है। बताया गया है कि वह करीब 20 साल से अमेरिका में रह रहा था। हालांकि, इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। मौके पर सामने आए वीडियो में व्यक्ति पारंपरिक बौद्ध भिक्षु जैसे वस्त्र पहने दिखाई देता है। उसने पहले फुटपाथ पर तिब्बती झंडा रखा और फिर खुद को आग लगा ली। आग लगने के बाद एक मिनट से भी कम समय में वह सड़क पर गिर पड़ा। घटना के बाद पुलिस ने पूरे इलाके को घेर लिया। मौके से 'चाइना आउट ऑफ तिब्बत' लिखे पर्चे भी बरामद किए गए।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

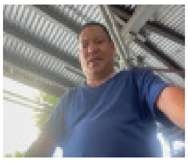

विदेश सचिव विक्रम मिसरी का कार्यकाल 2027 तक बढ़ा

नयी दिल्ली। 1 जुलाई को भारत सरकार ने विदेश सचिव विक्रम मिसरी के कार्यकाल को एक वर्ष के लिए बढ़ाया गया है। अब विक्रम 14 जुलाई 2027 तक भारत के विदेश सचिव के तौर पर काम करेंगे। विक्रम के कार्यकाल को कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने मंजूरी दी है। विक्रम के कार्यकाल को बढ़ाने की मंजूरी फंडामेंटल टूल 56(डी) के तहत दी गई है। इससे पहले नवंबर 2024 में विक्रम का कार्यकाल पूरा होने पर उनका कार्यकाल 2026 तक के लिए बढ़ाया गया था। विक्रम मिसरी 1989 बैच के इंडियन फॉरेंन सर्विस (आईएफसी) ऑफिसर हैं। विक्रम मिसरी चीन में भारत के राजदूत भी रह चुके हैं, उन्होंने लद्दाख गतिरोध के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। विक्रम प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं।1990 में विदेश मंत्रालय में पाकिस्तान डेस्क सहित विभिन्न जिम्मेदारियां निभाईं। 1997 से 2000 तक पूर्व पीएम आई के गुजराल के निजी सचिव रहे। 2006 से 2008 के बीच विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी के डायरेक्टर बने। विक्रम मिसरी ने विनय क्वात्रा की जगह विदेश सचिव का पद संभाला था। विदेश सचिव विदेश मंत्रालय का प्रशासनिक प्रमुख होता है।

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में बस खाई में गिरी, 40 यात्रियों की मौत

पख्तूनख्वा। पाकिस्तान के दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत में शुक्रवार तड़के एक भीषण सड़क हादसे में कम से कम 40 लोगों की मौत हो गई। क्वेटा से पेशावर जा रही एक यात्री बस बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा की सीमा के पास स्थित दाना सर इलाके में अनियंत्रित होकर गहरी पथरीली खाई में गिर गई। हादसे में आठ अन्य लोग घायल हुए हैं। बलूचिस्तान सरकार के प्रवक्ता शाहिद रिंद ने बताया कि बस पहाड़ी राजमार्ग पर चल रही थी, तभी चालक ने वाहन पर नियंत्रण खो दिया और बस गहरी खाई में जा गिरी। दुर्घटना दूरदराज के पहाड़ी क्षेत्र में होने के कारण राहत एवं बचाव कार्य चुनौतीपूर्ण रहा। घायलों को नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। समाचार एजेंसी एपी के अनुसार, बस तेज रफ्तार में थी और उसमें क्षमता से अधिक यात्री सवार थे। वहीं रॉयटर्स ने बचाव एजेंसी के हवाले से बताया कि बस क्वेटा से इस्लामाबाद की ओर जा रही थी। उसमें 48 यात्री सवार थे। शुरुआती जानकारी में तेज रफ्तार, ओवरलोडिंग और पहाड़ी मार्ग पर नियंत्रण खोना हादसे की संभावित वजह मानी जा रही है।

भूकंप के बाद वेनेजुएला में करिश्मा- मलबे में 8 दिन से फंसा कुत्ता जिंदा मिला

वेनेजुएला। वेनेजुएला में मलबे के नीचे लगातार आठ दिन तक फंसे रहने के बाद एक कुत्ते को जीवित बाहर निकाल लिया गया। लंबे समय तक चले रेस्क्यू अभियान के बाद उसके सुरक्षित मिलने की घटना को लोग किसी चमत्कार से कम नहीं मान रहे हैं। जानकारी के अनुसार, कुत्ता किसी आपदा के बाद मलबे में दब गया था। समय बीतने के साथ उसके जीवित मिलने की उम्मीद बेहद कम होती गई, लेकिन बचाव दल ने तलाश अभियान बंद नहीं किया। आखिरकार लगातार प्रयासों के बाद रेस्क्यू टीम उसे सुरक्षित बाहर निकालने में सफल रही। कुत्ते के जीवित मिलने के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने राहत की सांस ली। इस घटना ने एक बार फिर साबित किया कि आपदा के बाद शुरुआती दिनों के बाद भी राहत और बचाव अभियान जारी रखना कितना महत्वपूर्ण होता है। रेस्क्यू के बाद कुत्ते की स्वास्थ्य जांच की गई और उसे आवश्यक देखभाल के लिए सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। आठ दिन बाद उसके जीवित मिलने की यह घटना पूरे अभियान की सबसे भावुक और प्रेरक तस्वीर बनकर सामने आई है।

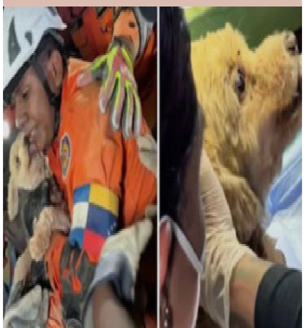

हंटर बाइडेन ने ट्रम्प को लेकर कसा तंज, बोले- एक ही युद्ध 38 बार खत्म करने के लिए नोबेल पीस प्राइज मिलना चाहिए

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन के बेटे हंटर बाइडेन ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर ट्रम्प को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित करने की बात कही। हंटर ने कटाक्ष करते हुए लिखा कि इतिहास में किसी राष्ट्रपति ने एक ही युद्ध को इतनी बार खत्म नहीं किया। हंटर बाइडेन ने अपनी पोस्ट में लिखा, 'मैं आधिकारिक तौर पर डोनाल्ड जे. ट्रम्प को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित करता हूं। इतिहास में किसी भी राष्ट्रपति ने एक ही युद्ध को इतनी बार खत्म नहीं किया।' इसके बाद उन्होंने दावा किया कि सीएनएन की गिनती के अनुसार ट्रम्प ईरान के साथ युद्ध खत्म होने की घोषणा कम से कम 38 बार कर चुके हैं। उन्होंने लिखा कि यह उपलब्धि नोबेल पुरस्कार समिति के संज्ञान में लाई जानी चाहिए। हंटर का यह बयान ऐसे समय आया है जब ट्रम्प लगातार यह दावा करते रहे हैं कि उन्होंने कई बड़े अंतरराष्ट्रीय संघर्षों को समाप्त कराया है। कुछ महीने पहले ट्रम्प ने कहा था कि उन्होंने आठ बड़े युद्ध रुकवाए हैं और सिद्धांत रूप से हर युद्ध रोकने पर उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार मिलना चाहिए। बाद में उन्होंने ट्रुथ सोशल पर यह दावा भी किया कि कुछ लोगों के मुताबिक उन्होंने 100 से अधिक युद्ध रुकवाए हैं। हंटर बाइडेन की पोस्ट पर सोशल मीडिया पर मिली-जुली प्रतिक्रिया देखने को मिली। कुछ यूजर्स ने इसे ट्रम्प के दावों पर तीखा व्यंग्य बताया, जबकि कई लोगों ने हंटर के पुराने विवादों का हवाला देते हुए उनकी आलोचना की। वहीं कुछ यूजर्स ने कहा कि व्यक्तिगत विवादों से अलग इस मुद्दे पर उनका तंज काफी सटीक और मजेदार है।

दावा-खामेनेई के अंतिम संस्कार में बीजेपी चीफ नवीन को न्योता,खड़गे समेत पवन खेड़ा भी आमंत्रित,2 करोड़ लोगों के पहुंचने का अनुमान

नयी दिल्ली। रान ने सुप्रीम लीडर रहे आयतुल्लाह खामेनेई के अंतिम संस्कार में भाजपा और कांग्रेस दोनों के सीनियर नेताओं को न्योता भेजा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पवन खेड़ा और पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद शामिल हैं। ईरान ने पीडीपी प्रमुख चीफ महबूबा मुफ्ती को भी अंतिम संस्कार में शामिल होने का न्योता भेजा है। इसके अलावा जैन संत और अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक आचार्य लोकेश मुनि को भी निमंत्रण भेजा गया है। ईरान ने पीएम मोदी को भी अंतिम संस्कार कार्यक्रम के लिए न्योता भेजा था। भारत सरकार पहले ही अंतिम संस्कार में अपना आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल भेजने का फैसला कर चुकी है। इसका नेतृत्व विदेश राज्य मंत्री पबित्र मार्गेरिटा करेंगे। उनके साथ बिहार के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सैयद अता हसनैन भी होंगे। ईरानी अधिकारियों का अनुमान है कि अंतिम यात्रा में 1.5 से 2 करोड़ लोग शामिल हो सकते हैं। ऐसा हुआ तो यह देश के इतिहास का सबसे बड़ा राजकीय अंतिम संस्कार होगा। पिछले 24 घंटे के 4 बड़े अपडेट्स:-1. होर्मुज में फिर बढ़ी जहाजों की आवाजाहीः सामुद्री निगरानी करने वाली कंपनी केप्लर के आंकड़ों के अनुसार, सोमवार को होर्मुज से कुल 40 जहाज गुजरे। इनमें से 16 जहाजों ने ईरान के समुद्री मार्ग का इस्तेमाल किया। 2. ईरान की शर्त- पहले फंसे 6 अरब डॉलर दोः ईरान चाहता है कि विदेशों में फंसी उसकी करीब 6 अरब डॉलर (करीब 57 हजार करोड़ रुपए) की संपत्ति पहले जारी की जाए। इसके बाद ही वह शांति समझौते के अगले चरण पर आगे बढ़ेगा। 3. पजशकियान बोले- समझौता सुप्रीम लीडर की मंजूरी से हुआः ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने कहा कि अमेरिका के साथ हुए समझौता ज्ञापन (एमओयू) ईरान के सुप्रीम लीडर की मंजूरी से हुआ है। 4. खामेनेई के अंतिम संस्कार के लिए सबसे बड़ा सुरक्षा इंतजामः ईरान अपने सर्वोच्च नेता अली खामेनेई के अंतिम संस्कार के लिए अब तक की सबसे कड़ी सुरक्षा व्यवस्था कर रहा है।

गुजरात/एमपी में जैश के 8 आतंकी पकड़े गए, टेररिस्ट नेटवर्क फैलाने का काम कर रहे थे,एटीएस-अपने काम पे

अहमदाबाद। गुजरात एटीएस ने आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद (जेम) के आठ आतंकियों को गुजरात और मध्य प्रदेश से पकड़ा है। ये सभी गुजरात में जेम का एक एक्टिव नेटवर्क बनाने के लिए काम कर रहे थे, ताकि आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दिया सके। एटीएस ने इनसे पूछताछ शुरू कर दी है।जैश ए मोहम्मद (जेम) पाकिस्तान का आतंकवादी संगठन है। इसे आतंकी मसूद अजहर ने साल 2000 में बनाया था। इस पर भारत समेत कई देशों में आतंकी हमलों को अंजाम देने के आरोप हैं। जैश का मुख्यालय पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के बहावलपुर में है। ये संगठन पाकिस्तान के कई इलाकों में ट्रेनिंग कैम्प और आतंकी नेटवर्क संचालित करता है। इसके मुखिया आतंकी मसूद अजहर को साल 1994 में जम्मू-कश्मीर में गिरफ्तार किया गया था। हालांकि, दिसंबर 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद बंधकों की रिहाई के बदले भारत सरकार ने उसे रिहा कर दिया था। 21 अप्रैल 2026ः आईसिस से जुड़े 2 आतंकी पकड़ाए, सोशल मीडिया से भर्ती कर नेटवर्क बना रहे थे- गुजरात एटीएस ने एंटी-नेशनल साजिश रच रहे दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। एटीएस के मुताबिक, ये आरोपी सोशल मीडिया के जरिए कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित होकर देश में 'गजवा-ए-हिंद' स्थापित करने की साजिश रच रहे थे। एएनआई के अनुसार, दोनों आरोपियों को 11 दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा गया है।

चलते ई-रिक्शा को बंद करने वाले चाइनीज एप बैन, ख़ुराफ़ाती ब्लूटूथ के जरिए बैटरी ऑफ कर देते थे

नई दिल्ली। दिल्ली समेत कई शहरों में ई-रिक्शा चालकों के लिए परेशानी बने 3 एप को सरकार ने एप स्टोर से हटाने के आदेश दिए हैं। ये एप बैट-बीएमएस, लॉसिजी और इपोच ली-आयन हैं। आईटी मंत्रालय ने इसकी जानकारी शुक्रवार को दी। हालांकि, ये एप प्ले स्टोर पर अब भी मौजूद हैं। हाल ही में शिकायतें मिली थीं कि कुछ लोग इन एप से ब्लूटूथ के जरिए ई-रिक्शा की बैटरी को बंद कर चलते ई-रिक्शा को रोक देते थे। इससे चालकों को काफी परेशानी हो रही थी। इन घटनाओं के वीडियो भी वायरल हुए। दरअसल, कुछ ई-रिक्शा की लीथियम बैटरियों का ब्लूटूथ मैनेजमेंट सिस्टम बिना पासवर्ड या कमजोर सुरक्षा के था, इसलिए एप उससे कनेक्ट हो गया। हालांकि, कारों के बैटरी सिस्टम में मजबूत सुरक्षा और एन्क्रिप्शन होता है, इसलिए कोई सामान्य एप उनसे कनेक्ट नहीं हो सकता। 8 सवाल-जवाब में समझें एप और बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम कैसे काम करता है? सवाल 1ः सोशल मीडिया पर वायरल बैट-बीएमएस एप क्या है? जवाबः 'बैट-बीएमएस' रियल टाइम बैटरी मैनेजमेंट टूल है। इसे चीनी कंपनी 'शेन्जेन ग्रेनर्जी टेक्नोलॉजी' ने डेवलप किया है। इसका मुख्य काम ब्लूटूथ-इनेबल्ड लीथियम बैटरी की निगरानी करना है। यह एप बैटरी की ओवरऑल जानकारियां डिस्प्ले करता है। यानी, यह बैटरी का डिजिटल डैशबोर्ड जैसा है। सवाल 2ः यह एप कैसे काम करता है और लोग इससे चलते हुए ई-रिक्शा कैसे रोक पा रहे हैं? जवाबः ई-रिक्शा की बैटरी में चार्जिंग, टेम्प्रेचर, वोल्टेज और उसकी हेल्थ पर नजर रखने के लिए ब्लूटूथ वाला बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम लगाया जाता है। ड्राइवर या मैकेनिक बैट-बीएमएस एप के जरिए इस सिस्टम से कनेक्ट हो जाते हैं और बैटरी की जानकारी देख सकते हैं। जरूरत पड़ने पर उसकी सेटिंग्स मैनेज कर सकते हैं। यह 10 से 15 मीटर के दायरे में कनेक्ट हो सकता है। बदमाश इसी का फायदा उठा रहे हैं। सवाल 3ः क्या देश के सभी ई-रिक्शा या इलेक्ट्रिक वाहन इस एप के जरिए रोके जा सकते हैं?जवाबः सोशल मीडिया पर यह वायरल हो रहा है। हकीकत में सभी ई-व्हीकल इसके जोखिम में नहीं हैं। यह एप केवल उन्हीं वाहनों पर असर डालता है जो कुछ खास शर्तों को पूरा करते हैं। पहली शर्तः वाहन में ब्लूटूथ सपोर्ट करने वाली लीथियम-आयन बैटरी लगी हो। दूसरी शर्तः बैटरी का ब्लूटूथ कनेक्शन बिना पासवर्ड के 'ओपन' छोड़ दिया हो। सवाल 4ः कौन से ई-रिक्शा इस एप के प्रभाव से पूरी तरह सुरक्षित हैं? जवाबः भारत में अभी बड़ी संख्या में ई-रिक्शा पुरानी लेड-एसिड बैटरियों पर चलते हैं, जिनमें ब्लूटूथ या डिजिटल मैनेजमेंट सिस्टम नहीं होता। इसलिए ये इन एप से पूरी तरह सुरक्षित हैं। इसके अलावा, जिन लीथियम बैटरियों के ब्लूटूथ सिस्टम में मैन्युफैक्चरर या डीलर ने मजबूत पासवर्ड सेट किया है, उन्हें भी इस एप के जरिए एक्सेस नहीं किया जा सकता। सवाल 5ः चीनी कंपनी ने ये एप किस उद्देश्य से बनाए थे? क्या ये ई-रिक्शा के लिए थे? जवाबः नहीं, कंपनी ने इन एप को ई-रिक्शा को कंट्रोल करने के लिए नहीं बनाया था। इसका मुख्य उद्देश्य सौर ऊर्जा उपकरणों और नावों या जहाजों की बैटरी में लगी लीथियम बैटरियों की सेहत पर नजर रखना था। इन एप का डिस्चार्ज ऑन/ऑफ फीचर सुरक्षा और रखरखाव के लिहाज से दिया गया था, ताकि जरूरत पड़ने पर बैटरी ओनर पावर कट कर सके।

लेकिन भारत में इसका इस्तेमाल ई-रिक्शा की बैटरियों को रिमोटली बंद करने के लिए किया जाने लगा। सवाल 6ः इससे ई-रिक्शा चालकों और सड़क सुरक्षा पर क्या असर पड़ रहा है? जवाबः लोगों का मानना है कि ई-रिक्शा की धीमी चाल के कारण ट्रैफिक जाम होता है। इससे परेशान होकर लोग इन्हें एप से बंद कर रहे हैं। कुछ लोग ऐसा मसखरी करने के लिए कर रहे हैं। यह चालकों के लिए मुसीबत बन गया है। सवाल 7ः सुरक्षा की इस बड़ी चूक के लिए असल में जिम्मेदार कौन है?जवाबः स्थानीय स्तर पर बैटरी असेंबल करने वाले, डीलर्स और कुछ लो-कॉस्ट वाले लीथियम बैटरी मेकर्स जिम्मेदार हैं। भारत में सस्ते ई-रिक्शा पार्ट्स के बाजार में कई ऐसी लीथियम बैटरियां बेची जा रही हैं, जिनके ब्लूटूथ बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम को बिना किसी पासवर्ड के खुला छोड़ दिया जाता है।

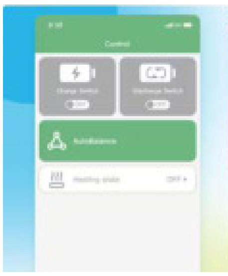

सीडीओ ने 40 कन्याओं का जन्मोत्सव मना कर बच्चियों को उपहार देकर महिलाओं को किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। महिला कल्याण विभाग द्वारा जिला महिला चिकित्सालय में कन्या जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता ने 40 बेटियों का जन्मोत्सव मना कर नवजात बच्चियों को उपहार स्वरूप बेबी किट एवं मिष्ठान देकर महिलाओं को सम्मानित किया। मुख्य विकास अधिकारी ने कन्या जन्मोत्सव के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि समाज में बालिकाओं के जन्म को एक उत्सव के रूप में मनाना, उनके प्रति सम्मान बढ़ाना और सकारात्मक सोच विकसित करना है। बेटियों का सम्मान कर यह संदेश देना कि बेटियां बोझ नहीं, बल्कि परिवार की शान और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी ने बताया कि ऐसे अनेक कार्यक्रम मुख्य रूप से ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' अभियान के तहत आयोजित किए जाते हैं, जिससे समाज में सकारात्मक सोच उत्पन्न कर समाज में बेटियों के प्रति संवेदनशीलता और सकारात्मक दृष्टिकोण को मजबूत किया जा सके। गिरते लिंगानुपात में सुधार करने हेतु कन्या भ्रूण हत्या को रोकना और बाल लिंगानुपात में सुधार करना है। उन्होंने सरकारी योजनाओं की जानकारी विस्तृत रूप से दी गई जैसे मातृ वंदना योजना, कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, शादी अनुदान योजना एवं राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना जैसी सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक कर योजनाओं के लाभ के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। कार्यक्रम का समापन मुख्य चिकित्सा अधीक्षक निर्मला साहू द्वारा धन्यवाद ज्ञापन करके किया गया। कार्यक्रम में जिला मिशन समन्वयक शेफाली सिंह, जेंडर स्पेशलिस्ट पूजा तिवारी, हॉस्पिटल संचालक मृणालिनी उपाध्याय, चिकित्सक डॉ सुनीता प्रसाद, सीनियर स्टाफ नर्स शशिबाला सिंह सहित महिलाएं उपस्थित रही।

'मिशन सेफ फ्यूचर' अभियान के अन्तर्गत 07 से 15 जुलाई तक स्कूली वाहनों की फिटनेस एवं परमिट नवीनीकरण के विरूद्ध विशेष अभियान

अभिभावक अपने बच्चों को वैध प्रपत्रों से आच्छादित स्कूली वाहनों से ही स्कूल भेजना करें सुनिश्चित - अरुण कुमार

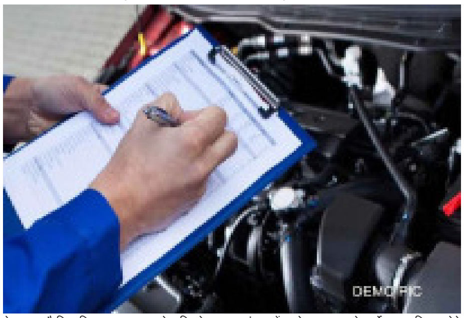

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। संभागीय परिवहन अधिकारी लखनऊ अरुण कुमार ने बताया है कि परिवहन आयुक्त, उत्तर प्रदेश के परिपत्र 29 जून 2026 द्वारा 'मिशन सेफ फ्यूचर' अभियान के अन्तर्गत जुलाई माह के प्रथम सप्ताह (07 जुलाई से 15 जुलाई तक) जिन स्कूली वाहनों की फिटनेस एवं परमिट नवीनीकरण की वैधता समाप्त हो चुकी है, के विरूद्ध विशेष अभियान चलाकर प्रवर्तन कार्यवाही करनें एवं शत-प्रतिशत स्कूली वाहनों को फिटनेस एवं परमिट से आच्छादित कराये जाने के निर्देश दिये गये है। ऐसे में स्कूल आने-जाने वाले स्कूली बच्चों कों अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने उक्त के परिप्रेक्ष्य में किसी अप्रिय घटना से बचने एवं सुरक्षा के दृष्टि से लखनऊ संभाग में पड़ने वाले जनपद-लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, हरदोई एवं लखीमपुर के समस्त ऐसे स्कूली वाहन स्वामियों से अपील की है कि जिनके स्कूली वाहनों की फिटनेस एवं परमिट की वैधता समाप्त हो चुकी है, किन्तु अभी तक नवीनीकरण नहीं कराया गया है, तो वे अपने स्कूली वाहनों की फिटनेस एवं परमिट नवीनीकरण का तत्काल करा लें, अन्यथा मोटर वाहन अधिनियम में दी गई व्यवस्थानुसार कठोर कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने इसके अतिरिक्त समस्त प्रधानाचार्या/विद्यालयों संचालकों से भी इस संबंध में अपील की है कि छात्र-छात्राओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने-अपने विद्यालयों/स्कूलों में स्कूली वाहनों के रूप में संचालित ऐसे स्कूली वहाने जिनकी फिटनेस एवं परमिट वैधता समाप्त हो चुकी है, उनका संचालन कदापि न होने दें एवं ऐसे स्कूली वाहन स्वामियों को उन्हें अपनी स्कूली वाहनों की फिटनेस एवं परमिट नवीनीकरण कराये जाने हेतु निर्देशित करें। 'मिशन सेफ फ्यूचर' के तहत लखनऊ संभाग के समस्त अभिभावकों से भी अनुरोध है कि अपने बच्चों को वैध प्रपत्रों से आच्छादित स्कूली वाहनों से ही स्कूल भेजना सुनिश्चित करें।

35 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद, 02 अभियोग पंजीकृत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार अवैध शराब के निर्माण बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध जारी प्रवर्तन अभियान के अन्तर्गत आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-2 रोबिन आर्य मय हमराह एवं थाना खीरों पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा विभिन्न स्थानों पर दबिश की कार्यवाही की गयी। टीम द्वारा लालगंज तहसील के थाना-खीरों अंतर्गत ग्राम-मुस्तकीमगंज एवं बेहटासातनपुर में अवैध कच्ची शराब बनाने के अड्डों/संदिग्ध घरों में दबिश के दौरान जनपद में कुल 35 लीटर अवैध कच्ची शराब एवं 300 किलो लहन बरामद कर लहन को मौके पर नष्ट करते हुए 02 अभियोग आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं में पंजीकृत किये गए। जिले में अवैध शराब के निर्माण एवं बिक्री पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु इस तरह की कार्यवाही आगे भी जारी रहेंगी।

डीएम ने रिंग रोड फेज-01 के निर्माण कार्यों का किया स्थलीय निरीक्षण,मानक के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य पूर्ण कराने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने आज जनपद में निर्माणाधीन रिंग रोड फेज-01 परियोजना का स्थलीय निरीक्षण कर कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता एवं निर्धारित मानकों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों का बारीकी से अवलोकन करते हुए संबंधित अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधियों को परियोजना को उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराने के निर्देश दिए। निरीक्षण के समय संबंधित अधिकारियों द्वारा अवगत कराया गया कि परियोजना का 95 प्रतिशत कार्य पूर्ण है गया है, परियोजना में रेलवे लाइन में ऊपरगामी रेलवे सेतु का निर्माण कार्य (लांचिग स्कीम) की अनुमति न मिलने के कारण बाधित था, जिसकी स्वीकृति रेलवे द्वारा दिनाँक- 08 मई 2026 को निर्गत कर दी गई, स्वीकृति मिल जाने के पश्चात निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है, आगामी 06-08 माह में परियोजना का कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा। जिलाधिकारी ने निर्माणाधीन सड़क, पुल-पुलिया, मिट्टी भराई, ड्रेनेज व्यवस्था, सुरक्षा मानकों तथा अन्य तकनीकी कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि रिंग रोड परियोजना जनपद की महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना से जुड़ी योजना है, जिसके पूर्ण होने से शहर में यातायात का दबाव कम होगा, आवागमन सुगम बनेगा तथा क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को नई गति मिलेगी। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि कार्यस्थल पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था, संकेतक बोर्ड, बैरिकेडिंग एवं यातायात प्रबंधन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि आमजन को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने यह भी कहा कि परियोजना से जुड़े संभावित अवरोधों का समय रहते समाधान करते हुए कार्यों में अनावश्यक विलंब न होने दिया जाए। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियन्ता राष्ट्रीय मार्ग खण्ड लो0नि0वि0 राज कुमार, सहायक अभियंता विकास श्रीवास्तव सहित संबंधित अधिकारी व कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मॉडलिंग की दुनिया में चमका प्रयागराज का उदीयमान सितारा अवनी सिंह राजपूत, सोशल मीडिया पर बना रही हैं नई पहचान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। संगम नगरी की प्रतिभाशाली मॉडल अवनी सिंह राजपूत आज मॉडलिंग और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसिंग की दुनिया में तेजी से अपनी अलग पहचान बना रही हैं।अपनी आकर्षक पर्सनैलिटी, आत्मविश्वास और फैशन सेंस के दम पर उन्होंने कम समय में मॉडलिंग इंडस्ट्री में एक मजबूत स्थान बनाया है। अवनी सिंह राजपूत केवल एक मॉडल ही नहीं, बल्कि एक लोकप्रिय सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और ब्यूटी टाइटल होल्डरङ भी हैं। उनके द्वारा साझा किए गए फैशन, लाइफस्टाइल और ट्रेंडिंग रील्स सोशल मीडिया पर खूब पसंद किए जाते हैं। उनके कई वीडियो अपलोड होते ही लाखों (मिलियंस) व्यूज़ तक पहुंच जाते हैं, जिससे उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। युवा वर्ग के बीच अवनी की स्टाइल, आत्मविश्वास और सकारात्मक व्यक्तित्व उन्हें एक प्रेरणादायक चेहरा बनाता है। विभिन्न फैशन शो, फोटोशूट और ब्रांड प्रमोशन में भी उनकी सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है।अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर वे प्रयागराज का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन करने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रही हैं।फैशन विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इसी तरह अवनी सिंह राजपूत अपनी मेहनत और समर्पण बनाए रखती हैं, तो आने वाले समय में वे देश के प्रमुख फैशन और ग्लैमर मंचों पर प्रयागराज का प्रतिनिधित्व करती नजर आ सकती हैं।

जनपद के 19 परीक्षा केन्द्रों पर सम्पन्न हो रही उ0प्र0 शिक्षक पात्रता परीक्षा सकुशल सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ ने बताया कि उ0प्र0 शिक्षक पात्रता की परीक्षा जनपद के 19 परीक्षा केन्द्रों पर सकुशल सम्पन्न हुई। परीक्षा को सकुशल, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु अधिकारियों द्वारा निरन्तर भ्रमणशील रहकर लगातार निगरानी की गई। आज की आयोजित परीक्षा में प्रथम पाली में कुल 8544 अभ्यर्थियों में से 7929 अभ्यर्थी उपस्थित व 615 अभ्यर्थी अनुपस्थित एवं द्वितीय पाली में कुल 8544 अभ्यर्थियों में से 8055 अभ्यर्थी उपस्थित व 489 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें, इस प्रकार दोनों पालियों में कुल 17088 अभ्यर्थियों में से 15984 अभ्यर्थी उपस्थित व 1104 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें।

मौलिक अधिकार पार्टी की दहीलामऊ में हुई संगठनात्मक बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रतापगढ़। मौलिक अधिकार पार्टी की जनपद इकाई प्रतापगढ़ की मासिक बैठक आवासीय कार्यालय दहीलामऊ उत्तरी, सदर प्रतापगढ़ में जिलाध्यक्ष विश्वास ठाकुर की अनुपस्थिति में सीताराम शर्मा जिला सचिव मौलिक अधिकार पार्टी की अध्यक्षता में एवं नगर अध्यक्ष राम कुमार शर्मा के संचालन में संपन्न हुई। इस बात अवसर पर मुख्य अतिथि रहे राष्ट्रीय संप्रेक्षक एवं पूर्व विधानसभा चुनाव प्रत्याशी शिव मूरत शर्मा को और सभाध्यक्ष सीताराम शर्मा को फूल मालाओं से सम्मान किया गया। तत्पश्चात विशिष्ट अतिथि राम बहादुर शर्मा प्रदेश महासचिव का एवं प्रदेश प्रवक्ता प्रेम शंकर शर्मा का भी मल्यार्पण किया गया। इसके बाद संचालक राम कुमार शर्मा ने पूर्व महिला जिलाध्यक्ष रंजना विश्वकर्मा को भी पुष्प गुच्छा दे कर सम्मानित किया।कार्यक्रम प्रारम्भ होने पर सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं ने क्रमशःमौलिक अधिकार पार्टी की मजबूती के लिए अपने अपने परिचय के साथ विचार भी प्रस्तुत किए। नगर अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने वार्ड व बूथ स्तर तक कार्यकर्ता बनाने पर बल दिया तो प्रदेश प्रवक्ता प्रेम शंकर शर्मा ने ग्रामीण क्षेत्र से कर शहरी क्षेत्र तक आए दिन होने वाली जन समस्याओं के निराकरण के निवारण हेतु युद्ध स्तर पर कार्य करने को प्रेरित किया। प्रदेश महासचिव राम बहादुर शर्मा नंद ने बताया कि आजादी के 80 साल बीत जाने के बाद भी सत्तारूढ़ रहीं सपा बसपा, भाजपा, कांग्रेस ने संविधान की प्रस्तावना,ः समता स्वंतत्रता, न्याय, बंधुत्व पर भी कार्य नहीं किया। और उत्तर प्रदेश में 40.5फीसदी अति पिछड़ी जातियों को राजनीति और नौकरी में जनसंख्या अनुपात में भागीदारी देने के सम्बन्ध में एक शब्द भी बोलने की जरूरत नहीं समझी। जबकि मौलिक अधिकार पार्टी मौलिक अधिकार पार्टी सत्ता में आने पर तुरन्त 40.5फीसदी अति पिछड़ी जातियों को जनसंख्या अनुपात में राजनीति और नौकरी में पृथक आरक्षण लागू करने का कार्य करेगी। मुख्य अतिथि शिव मूरत शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी शास्त्री के आदेशानुसार सभी पदाधिकारी गण और कार्यकर्ता गण को दो माह के अंदर ब्लॉक, तहसील, जिला के लिए निर्धारित सभी पदों पर पदाधिकारी धरना का मनोनयन कर बूथों पर पहरेदार नियुक्त किए जाने हैं अतः सभी पदाधिकारी गण और कार्यकर्ता गण युद्ध स्तर पर कार्य कर लक्ष्य को पूरा करें। जिससे मिशन2027 में मौलिक अधिकार पार्टी जनता जनार्दन की खुशहाली के लिए नुक्कड़ सभाएं लगाकर उन्हें उनके हक व अधिकार को बताया जाए। जिससे पूंजीवाद को नकार कर लोकतंत्र को बचाया जा सके।इसके पश्चात् प्रदेश महासचिव मौलिक अधिकार पार्टी उत्तर प्रदेश राम बहादुर शर्मा ने तहसील लालगंज के और ब्लॉक सांडवा चंडिका के मनोनीत पदाधिकारी गण को मल्यार्पण कर सम्मानित करवाया। जिनके नाम व पद निम्न हैंः तहसील अध्यक्ष राम मूरत शर्मा, तहसील महासचिव रामराज शर्मा, तहसील मुख्य संगठन सचिव जसवंत पासी तथा ब्लॉक अध्यक्ष सड़वा चंडिका रमाशंकर शर्मा, महासचिव रमेश वर्मा उर्फ़ बाबा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पिंटू यादव हैं। अंतिम वक्ता के रूप में पूर्व महिला जिलाध्यक्ष मौलिक अधिकार पार्टी प्रतापगढ़ की रंजना विश्वकर्मा ने कहा कि महिलाओं को राजनीति और नौकरी में 50ङ्ग आरक्षण वर्गीय आधार पर लागू किया जाए । तथा विधानसभा चुनाव 2027 में अधिक से अधिक संख्या में प्रत्याशी बनाया जाय। प्रतापगढ़ जिले में ब्लॉक स्तर पर पदाधिकारी बनाने की बात कहती हुईं अपनी बात को विराम दिया। अंततः सभाध्यक्ष सीताराम शर्मा ने अपने वक्तव्य के साथ आए हुए कार्य कर्ताओं के प्रति आभार प्रकट करते हुए बैठक का समापन किया।

जुलाई माह की ग्राम चौपाल के लिए अधिकारी नामित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता ने माह जुलाई 2026 के प्रत्येक शुक्रवार को समस्त विकास खंडों की ग्राम पंचायतों में आयोजित होने वाली ''ग्राम चौपाल'' (गाँव की समस्याए गाँव में समाधान) के लिए विकास खण्डवार रोस्टर निर्धारित किया है।

निर्धारित रोस्टर के अनुसार परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, जिला विकास अधिकारी, उपायुक्त, श्रम रोजगार एवं उपायुक्त, स्वतः रोजगार द्वारा ग्राम पंचायतों में आयोजित होने वाले ग्राम चौपाल में से किसी एक विकासखंड की ग्राम चौपाल में प्रतिभाग कर जनसमस्याओं का निस्तारण किया जायेगा।

निर्धारित रोस्टर के अनुसार 03 जुलाई को परियोजना निदेशक, जि0ग्रा0वि0अभि0 विकास खण्ड डीह में, जिला विकास अधिकारी विकास खण्ड लालगंज में, उपायुक्त, श्रम रोजगार विकास खण्ड सरेनी में एवं विकास खण्ड राही में उपायुक्त, स्वतः रोजगार की अध्यक्षता में किसी एक विकास खण्ड के ग्राम चौपाल में प्रतिभाग कर जनसमस्याओं का निस्तारण किया गया।

इसी प्रकार 10 जुलाई को परियोजना निदेशक, जि0ग्रा0वि0अभि0 ऊँचाहार में, जिला विकास अधिकारी बछरावां में, उपायुक्त, श्रम रोजगार सलोन में एवं उपायुक्त, स्वतः रोजगार दीनशाहगौरा में। 17 जुलाई को परियोजना निदेशक, जि0ग्रा0वि0अभि0 सतांव में, जिला विकास अधिकारी जगतपुर में, उपायुक्त, श्रम रोजगार डलमऊ एवं उपायुक्त, स्वतः रोजगार महराजगंज में।

24 जुलाई को परियोजना निदेशक जि0ग्रा0वि0अभि0 शिवगढ़, जिला विकास अधिकारी अमावां, उपायुक्त, श्रम रोजगार छतोह, उपायुक्त, स्वतः रोजगार विकास खण्ड लालगंज में।31 जुलाई को परियोजना निदेशक जि0ग्रा0वि0अभि0 दीनशाहगौरा, जिला विकास अधिकारी हरचन्दपुर, उपायुक्त, श्रम रोजगार खीरों एवं उपायुक्त, स्वतः रोजगार विकास खण्ड रोहनियां के किसी एक ग्राम चौपाल में प्रतिभाग कर जनसमस्याओं का निस्तारण करायेंगे।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एकानम परियोजना को दी कानूनी मंजूरी,ग्रेट वैल्यू रियल्टी की नोएडा सेक्टर-107 स्थित लक्ज़री परियोजना से जुड़े सभी अनुमोदनों को बरकरार रखा

उच्च न्यायालय ने याचिका को 'निराधार' बताते हुए खारिज किया, नोएडा प्राधिकरण द्वारा प्रदान की गई अतिरिक्त एफएआर स्वीकृति तथा राज्य सरकार के पुनरीक्षण आदेश को पूर्ण रूप से वैध ठहराया,न्यायालय ने 978 गृह खरीदारों द्वारा दी गई सहमति को वैध एवं अप्रत्याहृत (अवापसी) माना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर भारत के सबसे विश्वसनीय रियल एस्टेट डेवलपर्स में से एक ग्रेट वैल्यू रियल्टी को एक महत्वपूर्ण कानूनी सफलता मिली है। माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक निर्णय में स्पष्ट रूप से कहा कि 'याचिका में कोई दम नहीं है (the writ petition is devoid of merit)', जिससे कंपनी को पूर्ण कानूनी और नैतिक विजय प्राप्त हुई है। 1 जुलाई, 2026 को दिए गए अपने निर्णय में माननीय उच्च न्यायालय ने नोएडा के सेक्टर-107 स्थित ग्रेट वैल्यू रियल्टी की अल्ट्रा-लक्ज़री आवासीय परियोजना एकानम (Ekanam) के लिए स्वीकृत अतिरिक्त फ्लोर एरिया रेशियो (FAR) को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया। इस निर्णय के साथ परियोजना से संबंधित सभी वैधानिक अनुमोदन–19 दिसंबर, 2024 को नोएडा प्राधिकरण द्वारा जारी स्वीकृति आदेश तथा 27 अक्टूबर, 2025 को राज्य सरकार

द्वारा पारित पुनरीक्षण आदेश–पूर्ण रूप से बरकरार रखे गए हैं। अब एकानम परियोजना पूरी कानूनी स्पष्टता और निश्चितता के साथ आगे बढ़ेगी। निर्णय पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ग्रेट वैल्यू रियल्टी के निदेशक पयास अग्रवाल ने कहा, 'हम माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रति आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने ऐसा निर्णय दिया जिसने विधिक प्रक्रिया की निष्पक्षता को बरकरार रखा और उन एक हजार से अधिक परिवारों के विश्वास को भी सुदृढ़ किया, जिन्होंने हम पर भरोसा जताया है। यह फैसला इस बात की पुष्टि करता है कि हमने प्रत्येक चरण में पूरी पारदर्शिता और निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन किया है। अब जबकि कानूनी स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो चुकी है, हमारा संपूर्ण ध्यान परियोजना को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा करने पर केंद्रित रहेगा। हम एकानम के अपने विज़न को साकार करने तथा शहर एवं यहां के लोगों की सेवा के अपने संकल्प को और अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।' अपने निर्णय में न्यायालय ने उन तथ्यों को निर्विवाद माना जिनके आधार पर यह फैसला सुनाया गया। न्यायालय ने कहा कि जिस भूमि पर एकानम परियोजना विकसित की जा रही है, उसे वर्ष 2010 में परियोजना की शुरुआत से ही भविष्य के विकास क्षेत्र (Future Development Area) के रूप में दर्शाया गया था। इसलिए गृह खरीदारों ने इस तथ्य की पूर्ण जानकारी के साथ संपत्ति खरीदी थी। न्यायालय ने यह भी माना कि नोएडा प्राधिकरण द्वारा प्रत्येक हस्ताक्षर का स्वतंत्र सत्यापन किए जाने के बाद 978 गृह खरीदारों की सहमति वैध पाई गई, जो इलाहाबाद उच्च न्यायालय की खंडपीठ द्वारा निर्धारित आवश्यक बहुमत के मानक से अधिक है। इसके अतिरिक्त, न्यायालय ने अपने आदेश में यह भी दर्ज किया कि अतिरिक्त एफएआर की स्वीकृति प्रदान करने से पूर्व नोएडा प्राधिकरण ने पूरी प्रक्रिया के दौरान पारदर्शी ढंग से कार्य किया। ग्रेट वैल्यू रियल्टी ने कहा है कि वह एकानम परियोजना के संबंध में नोएडा प्राधिकरण द्वारा निर्धारित प्रत्येक शर्त का पूर्ण अनुपालन करेगी तथा निर्माण कार्य के दौरान शरणम समुदाय के साथ सकारात्मक और रचनात्मक संवाद बनाए रखेगी।

सूचना निदेशक ने पत्रकार बन्धुओं के हितार्थ उठाया महत्वपूर्ण कदम, आयुष्मान कार्ड प्राप्त करना अब हुआ और आसान

पत्रकार बन्धुओं की सुविधा के लिए जल्द ही नया पोर्टल होगा शुरू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। निदेशक सूचना सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0प्र0 विशाल सिंह ने बताया कि पत्रकार बन्धुओं के हितार्थ महत्वपूर्ण कदम उठाये गये है। अब पत्रकार बन्धुओं को आयुष्मान कार्ड और आसानी से प्राप्त हो सकेंगे। उन्होने बताया कि जिन पत्रकार बन्धुओं ने आयुष्मान कार्ड के लिए अपना आवेदन किया है और कतिपय कारणों से उनका कार्ड नहीं बन पाया है,वह https://beneficiary.nha.gov.inपोर्टल पर अपने कार्ड का स्टेटस चेक कर सकते है। पोर्टल पर नाम प्रदर्शित होने पर किसी भी प्रकार के संसोधन के लिए संबधित जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में सम्पर्क स्थापित कर संसोधन भी करा सकते है। उन्होने यह भी बताया कि जिन पत्रकार बन्धुओं ने अभी तक आयुष्मान कार्ड के लिए अपना आवेदन नहीं किया है या आवेदन किया है और उनका कार्ड नहीं बना है, इसकेे समाधान हेतु शीघ्र ही ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया जायेगा। पोर्टल शुरू होने के पश्चात पत्रकार बंधु अपने जनपद के जिला सूचना अधिकारी के माध्यम से पोर्टल पर अपना आवेदन उपलब्ध करा सकेंगे। पोर्टल प्रारम्भ होने की सूचना तत्काल उपलब्ध करा दी जाएगी।

गुमशुदगी की खबर

ट्रेन यात्रा के दौरान महिला लापता, जानकारी देने वाले को 1 लाख रुपये का इनाम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर/कटनी। 27 जून 2026 को अहमदाबाद से गोरखपुर जा रही ट्रेन संख्या 19489 में अपने परिवार के साथ यात्रा कर रही अंजली यादव (41 वर्ष) संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गईं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, अंजली यादव कोच बी-1, सीट नंबर 41 पर यात्रा कर रही थीं। उनका पीएनआरः 8647819758 है। बताया गया है कि रात लगभग 12 बजे से सुबह 4 बजे के बीच सागर-दमोह-कटनी-मैहर रेलखंड के बीच कहीं वे लापता हो गईं।

परिजनों के अनुसार, उनके पास केवल एक हैंड पर्स था, जबकि मोबाइल फोन नहीं था। यदि किसी व्यक्ति को अंजली यादव के संबंध में कोई भी जानकारी मिले या वे कहीं दिखाई दें, तो कृपया तत्काल 9978945228 पर संपर्क करें। जानकारी देने वाले व्यक्ति को 1,00,000 (एक लाख) रुपये का इनाम दिया जाएगा। मानवीय अपीलः कृपया इस सूचना को अधिक से अधिक साझा करें, ताकि अंजली यादव को जल्द से जल्द खोजा जा सके।

साथ ही आवश्यकता पड़ने पर निकटतम जीआरपी/आरपीएफ अथवा रेलवे हेल्पलाइन 139 पर भी सूचना दें।

नाज़रेथ हॉस्पिटल के नर्सिंग स्टाफ और स्टूडेंट्स ने देखी प्रेरणादायक फिल्म 'भारत भाग्य विधाता'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। नाज़रेथहॉस्पिटल के

निदेशकफादर विपिन डी'सूज़ाकी पहल पर हॉस्पिटल के सभी नर्सिंग स्टाफ और स्कूल ऑफ नर्सिंग के छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणादायक फिल्म'भारत भाग्य विधाता'का विशेष शोपीवीआर सिविल लाइंस, प्रयागराजमें आयोजित किया गया। ताकि सभी नर्सिंग स्टाफ बिना मरीजों की सेवाओं पर असर डाले फिल्म देख सकें, इसके लिए दो दिनों में दो शो रखे गए।2 जुलाईको पहले शो में लगभग130लोगों ने फिल्म देखी, जबकि3 जुलाईको दूसरे शो में करीब240नर्सिंग स्टाफ और छात्र-छात्राएं शामिल हुए। इस तरह दोनों दिनों में कुल370लोगों ने इस प्रेरणादायक फिल्म का आनंद लिया। इस मौके पर फिल्म के निर्देशकश्री मनोज बृजगोपालतापड़ियाभी दोनों दिन उपस्थित रहे। उन्होंने सभी नर्सिंग स्टाफ और विद्यार्थियों से बातचीत की और फिल्म बनने का उद्देश्य, इसकी कहानी और इसमें छिपे संदेश को बहुत ही सरल तरीके से बताया। उनके विचारों ने सभी को देशप्रेम, ईमानदारी, सेवा और अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाने की प्रेरणा दी। फिल्म देखने के बाद सभी नर्सिंग स्टाफ और

विद्यार्थियों ने फिल्म की खूब सराहना की। सभी ने कहा कि यह फिल्म सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन में अच्छा इंसान बनने, देश के प्रति जिम्मेदारी निभाने और समाज की सेवा करने की प्रेरणा देती है। कई लोगों ने कहा कि इस फिल्म ने उन्हें अपने नर्सिंग पेशे को और अधिक समर्पण, प्रेम और सेवा-भाव के साथ निभाने का हौसला दिया।

नाज़रेथहॉस्पिटल के निदेशकफादर विपिन डी'सूज़ाने कहा कि अस्पताल में मरीजों की अच्छी देखभाल के साथ-साथ कर्मचारियों और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर भी बराबर ध्यान दिया जाता है। इसी उद्देश्य से इस तरह के प्रेरणादायक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। कार्यक्रम के अंत में नाज़रेथहॉस्पिटल परिवार नेश्री मनोज बृजगोपालतापड़ियाका धन्यवाद किया और उन्हें स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश ने जारी किया लखनऊ बैठक का एजेंडा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश (पंजीकृत) ने लखनऊ के धर्मोदय बुद्ध विहार पुरनिया में 11 व 12 जुलाई को

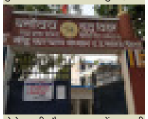

होने वाली बैठक का एजेंडा जारी कर दिया है। इस बात की जानकारी महासभा के प्रांतीय अध्यक्ष मानसिंह गौतम एडवोकेट और प्रांतीय महामंत्री डॉ अरविन्द कुमार गौतम द्वारा जारी संयुक्त विज्ञप्ति के हवाले से के पी सविता बौद्ध (गौरीगंज) महामंत्री भारतीय बौद्ध महासभा उ0 प्र0 शाखा जनपद अमेठी ने दी है। जानकारी के अनुसार पहले दिन 11 जुलाई को दस बजे त्रिशरण पंचशील ग्रहण पूर्वक बुद्ध पूजा वंदना बौद्ध धर्म गुरु भंते ज्ञानालोक द्वारा धम्म देशना से शुरुआत होगी। इसके बाद पारस्परिक परिचय विगत कार्यवाही की पुष्टि, देयकों का जमा किया जाना, अधीनस्थ शाखाओं द्वारा नये पदाधिकारियों की पूर्ण पते सहित सूची जमा करना शाखाओं के गठन की तिथि सदस्यता शुल्क जमा करना, शाखाओं में बौद्ध विनय प्रशिक्षण शिविर पर विचार, पिछली रसीद बुकें जमा करना, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता व विभिन्न प्रकाशनों पर विचार विमर्श करना, बी डी बी आर ए सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्थान खुर्जा बुलंदशहर की प्रगति आख्या, शाखाओं की समीक्षा की जाएगी। दूसरे दिन 12 जुलाई रविवार को महासभा के संविधान संशोधन की जानकारी देना, शाखाओं के पुनर्गठन पर विचार विमर्श, ड्रेस कोड, शाखाओं द्वारा न्यूनतम सहयोग जमा करने पर विचार, आदि बिंदु रखे गए हैं।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एकानम परियोजना को दी कानूनी मंजूरी

ग्रेट वैल्यू रियल्टी की नोएडा सेक्टर-107 स्थित लक्ज़री परियोजना से जुड़े सभी अनुमोदनों को बरकरार रखा,उच्च न्यायालय ने याचिका को 'निराधार' बताते हुए खारिज किया, नोएडा प्राधिकरण द्वारा प्रदान की गई अतिरिक्त एफएआर स्वीकृति तथा राज्य सरकार के पुनरीक्षण आदेश को पूर्ण रूप से वैध ठहराया, न्यायालय ने 978 गृह खरीदारों द्वारा दी गई सहमति को वैध एवं अप्रत्याहृत (अवापसी) माना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा उत्तर भारत के सबसे विश्वसनीय रियल एस्टेट डेवलपर्स में से एक ग्रेट वैल्यू रियल्टी को एक महत्वपूर्ण कानूनी सफलता मिली है। माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक निर्णय में स्पष्ट रूप से कहा कि 'याचिका में कोई दम नहीं है (the writ petition is devoid of merit)', जिससे कंपनी को पूर्ण कानूनी और नैतिक विजय प्राप्त हुई है। 1 जुलाई, 2026 को दिए गए अपने निर्णय में माननीय उच्च न्यायालय ने नोएडा के सेक्टर-107 स्थित ग्रेट वैल्यू रियल्टी की अल्ट्रा-लक्ज़री आवासीय परियोजना एकानम (Ekanam) के लिए स्वीकृत अतिरिक्त फ्लोर एरिया रेशियो (FAR) को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया। इस निर्णय के साथ परियोजना से संबंधित सभी वैधानिक अनुमोदन– 19 दिसंबर, 2024 को नोएडा प्राधिकरण द्वारा जारी स्वीकृति आदेश तथा 27 अक्टूबर, 2025 को राज्य सरकार द्वारा पारित पुनरीक्षण आदेश–पूर्ण रूप से बरकरार रखे गए हैं। अब एकानम परियोजना पूरी कानूनी स्पष्टता और निश्चितता के साथ आगे

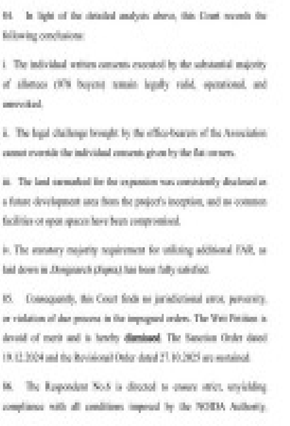

84. In light of the detailed analysis above, this Court records the following conclusions:

i. The individual written consents executed by the substantial majority of allottees (978 buyers) remain legally valid, operational, and unrevoked.

ii. The legal challenge brought by the office-bearers of the Association cannot override the individual consents given by the flat owners.

iii. The land earmarked for the expansion was consistently disclosed as a future development area from the project's inception, and no common facilities or open spaces have been compromised.

iv. The statutory majority requirement for utilizing additional FAR, as laid down in [illegible] (Supra) has been fully satisfied.

85. Consequently, this Court finds no jurisdictional error, perversity, or violation of due process in the impugned orders. The Writ Petition is devoid of merit and is hereby **dismissed**. The Sanction Order dated 19.12.2024 and the Revisional Order dated 27.10.2025 are sustained.

86. The Respondent No.[illegible] is directed to ensure strict, unyielding compliance with all conditions imposed by the NOIDA Authority.

बढ़ेगी। निर्णय पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ग्रेट वैल्यू रियल्टी के निदेशक पयास अग्रवाल ने कहा- 'हम माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रति आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने ऐसा निर्णय दिया जिसने विधिक प्रक्रिया की निष्पक्षता को बरकरार रखा और उन एक हजार से अधिक परिवारों के विश्वास को भी सुदृढ़ किया, जिन्होंने हम पर भरोसा जताया है। यह फैसला इस बात की पुष्टि करता है कि हमने प्रत्येक चरण में पूरी पारदर्शिता और निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन किया है। अब जबकि कानूनी स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो चुकी है, हमारा संपूर्ण ध्यान परियोजना को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा करने पर केंद्रित रहेगा। हम एकानम के अपने विज़न को साकार करने तथा शहर एवं यहां के लोगों की सेवा के अपने संकल्प को और अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

' अपने निर्णय में न्यायालय ने उन तथ्यों को निर्विवाद माना जिनके आधार पर यह फैसला सुनाया गया। न्यायालय ने कहा कि जिस भूमि पर एकानम परियोजना विकसित की जा रही है, उसे वर्ष 2010 में परियोजना की शुरुआत से ही भविष्य के विकास क्षेत्र (Future Development Area) के रूप में दर्शाया गया था। इसलिए गृह खरीदारों ने इस तथ्य की पूर्ण जानकारी के साथ संपत्ति खरीदी थी। न्यायालय ने यह भी माना कि नोएडा प्राधिकरण द्वारा प्रत्येक हस्ताक्षर का स्वतंत्र सत्यापन किए जाने के बाद 978 गृह खरीदारों की सहमति वैध पाई गई, जो इलाहाबाद उच्च न्यायालय की खंडपीठ द्वारा निर्धारित आवश्यक बहुमत के मानक से अधिक है। इसके अतिरिक्त, न्यायालय ने अपने आदेश में यह भी दर्ज किया कि अतिरिक्त एफएआर की स्वीकृति प्रदान करने से पूर्व नोएडा प्राधिकरण ने पूरी प्रक्रिया के दौरान पारदर्शी ढंग से कार्य किया। ग्रेट वैल्यू रियल्टी ने कहा है कि वह एकानम परियोजना के संबंध में नोएडा प्राधिकरण द्वारा निर्धारित प्रत्येक शर्त का पूर्ण अनुपालन करेगी तथा निर्माण कार्य के दौरान शरणम समुदाय के साथ सकारात्मक और रचनात्मक संवाद बनाए रखेगी।

अमरपाटन के खरमखेड़ा में बड़ा हादसाः कुएं में गिरी गाय को बचाने उतरे तीन लोगों की मौत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। जिले के अमरपाटन थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत खरमखेड़ा में शुक्रवार को एक दर्दनाक हादसे में एक ही बस्ती के तीन लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि एक गाय कुएं में गिर गई थी, जिसे बचाने के प्रयास में तीन लोग एक-एक कर कुएं में उतरे, लेकिन सभी की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में शोक की लहर फैल गई। सूचना मिलते ही पुलिस एवं प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया। ग्रामीणों का आरोप है कि जिस कुएं में यह हादसा हुआ, उसमें संभवतः करंट प्रवाहित हो रहा था या फिर जहरीली गैस बनने के कारण यह घटना हुई। हालांकि, हादसे का वास्तविक कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और तकनीकी जांच के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा। फिलहाल प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि जांच पूरी होने तक किसी भी तरह की अपुष्ट जानकारी पर विश्वास न करें।

कानपुर में बारिश ने 15 साल का रिकॉर्ड तोड़ा

कानपूर। यूपी में मानसूनी बारिश का सिलसिला जारी है। आज मौसम विभाग ने 28 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। आंधी के साथ बिजली गिरने की भी संभावना जताई है। सुबह

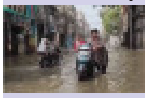

से ज्यादातर जिलों में धूप निकली हुई है। बीच-बीच में बादल भी छा रहे हैं। कानपुर में बारिश ने 15 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। 3 जुलाई को यहां 108 मिमी बारिश दर्ज की गई। इससे पहले, 1 जुलाई 2011 को 101 मिमी बारिश हुई थी। शुक्रवार को प्रदेश के 20 जिलों में बारिश हुई। मथुरा में भारी बारिश की तस्वीरें देर शाम सामने आईं, जिनमें हालात बिगड़े हुए दिखे। सड़कों पर एक फीट तक पानी भर गया। कई लोगों की गाड़ियां बंद हो गईं। रेलवे अंडरपास में बारिश का पानी गर्दन तक भर गया। पिछले 24 घंटे में प्रदेश में औसतन 6.2 मिमी बारिश हुई, जो सामान्य 5.7 मिमी से 9 फीसदी ज्यादा है। वहीं, 1 जून से अब तक 64.5 मिमी बारिश दर्ज की गई, जो सामान्य 112.5 मिमी से 43 प्रतिशत कम है। लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया-'यूपी में मानसून सक्रिय हो गया है।

बेथनी कॉन्वेंट स्कूल में 27 वर्षों की उत्कृष्ट सेवा के उपरांत चित्र बहादुर जी का गरिमामय सेवानिवृत्ति समारोह आयोजित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। बेथनी कॉन्वेंट स्कूल में 27 वर्षों की समर्पित एवं उत्कृष्ट सेवाओं के उपरांत चित्र बहादुर जी के सम्मान में एक गरिमामय सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की प्राचार्या सिस्टर डॉ. अनीता मोरास ने बेथनी एजुकेशन सोसाइटी की सुपीरियर सिस्टर जैसी मारिया द्वारा प्रेषित प्रशंसा-पत्र का वाचन किया। तत्पश्चात उप-प्राचार्या टेरेसा सिंह ने प्राचार्या सिस्टर डॉ. अनीता मोरास की ओर से प्रशंसा-पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समारोह को विशेष रूप से आकर्षक बना दिया और उपस्थित जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। अपने संबोधन में चित्रा बहादुर जी ने विद्यालय में बिताए गए 27 वर्षों की स्मृतियों को साझा करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा विद्यालय परिवार के साथ बिताए समय को अपने जीवन की अमूल्य धरोहर बताया। समारोह में विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकीय एवं गैर-शिक्षकीय स्टाफ तथा छात्र-छात्राओं की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी ने उनके स्वस्थ, सुखद एवं सफल सेवानिवृत्त जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

5 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथों दबोचा गया मेडिकल ऑफिसर

(आधुनिक समाचार नटवर्क) शहडोल/ब्यौहारी। भ्रष्टाचार के खिलाफ लोकायुक्त की कार्रवाई में शुक्रवार को शहडोल जिले के जयसिंहनगर विकासखंड स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र उफरी के मेडिकल ऑफिसर डॉ. महेश चंद्र शर्मा को 5 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया। आरोपी चिकित्सक शिकायतकर्ता की पत्नी का सलग्नीकरण (अटैचमेंट) आदेश निरस्त कराने एवं रवानगी नहीं देने के बदले 10 हजार रुपये की रिश्वत मांग रहा था। लोकायुक्त रीवा के अनुसार उमरिया जिले के पटनार खुर्द निवासी वीरेंद्र सिंह ने 18 मई 2026 को शिकायत दर्ज कराई थी कि उनकी पत्नी पार्वती सिंह के सलग्नीकरण आदेश को निरस्त कराने और रिलीव न करने के एवज में डॉ. महेश चंद्र शर्मा 10 हजार रुपये की रिश्वत मांग रहे हैं। शिकायत के सत्यापन के दौरान आरोपी ने 5 हजार रुपये पहले ही ले लिए थे और शेष 5 हजार रुपये की मांग बरकरार रखी। शिकायत सही पाए जाने के बाद लोकायुक्त पुलिस अधीक्षक योगेश्वर शर्मा के निर्देशन में ट्रैप टीम गठित की गई। शुक्रवार को जयसिंहनगर बस स्टैंड पर जैसे ही शिकायतकर्ता ने आरोपी को 5 हजार रुपये दिए, पहले से तैनात लोकायुक्त टीम ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। आरोपी के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 (संशोधित 2018) की धारा 7 के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। यह कार्रवाई लोकायुक्त के महानिदेशक योगेश देशमुख, उप पुलिस महानिरीक्षक मनोज सिंह तथा पुलिस अधीक्षक योगेश्वर शर्मा के मार्गदर्शन में हुआ।

क्या कुछ करियर में 'डीजे' अकेलापन दूर करने का तरीका है?

हमारी कुक कमला शाहू महीने में कम-से-कम दस बार हमसे शिकायत करती हैं कि वे कभी भी रात 2 बजे से पहले नहीं सो पातीं। ऐसा तब है, जब वे रोज रात 8 बजे हमारे घर से चली जाती हैं और पांच मिनट के वॉकिंग

डिस्टेंस पर ही रहती हैं। इसकी वजह उनका तीसरा अविवाहित बेटा सतीश है, जो नौकरी के बाद डिस्क जॉकी (डीजे) का काम भी करता है और होटल से रात 1.30 बजे लौटता है। कमला उसे खाना परोसने के बाद ही सो पाती हैं। पिछले महीने जब सतीश की शादी हुई, तो मैंने यूं ही उससे कहा कि चूंकि तुम्हारी शादी हो गई है तो अब डीजे का काम छोड़ सकते हो। लेकिन सतीश ने मुझे अलग नजरिया दिया। उसने बताया कि वह एक बड़ी फर्म के बैकएंड में काम करता है, जहां अकेलापन बहुत परेशान करता है। इसलिए डीजे पूरे दिन क्रिएटिव बने रहने में उसकी मदद करता है। उसने कहा कि 'डीजे म्यूजिक पूरी तरह जाने-पहचाने साउंड्स को नए संदर्भ में पेश करने पर आधारित होता है। कोई अनपेक्षित मैश-अप या चतुराई भरे ट्रांजिशन को सुनना आपके दिमाग को सिखाता है कि रोजमर्रा के काम में भी दो बिल्कुल अलग कॉन्सेप्ट को कैसे जोड़ा जाए।' उसने कहा कि दुनिया के कई बेहद अमीर आंत्रप्रेन्योर्स कुछ घंटों के लिए डीजे का काम करते हैं, क्योंकि यह कई अहम तरीकों से आपकी कल्पनाशक्ति बढ़ाने के लिए ताकतवर उत्प्रेरक का कार्य करता है। घर लौटकर मैंने उन प्रमुख आंत्रप्रेन्योर्स की सर्च की, जो कॉग्निटिव क्रिएटिविटी बढ़ाने के लिए डीजे म्यूजिक इस्तेमाल करते हैं। जाहिर तौर पर डीजे सेट्स के साथ जुड़ने से उन खास न्यूरल पाथ-वे की एक्सरसाइज होती है, जो इनोवेटिव प्रॉब्लम सॉल्विंग,कॉग्निटिव फ्लेक्सिबिलिटी और इमोशनल एक्सप्रेशन से संबंधित होते हैं। ऑनलाइन जिस पहले व्यक्ति का नाम मुझे दिलचस्प लगा, वह लंदन की फैमिली लॉ फर्म 'साउथगेट सॉलिसिटर्स' के फाउंडर और मैनेजिंग डायरेक्टर हसन हादी थे। उन्होंने पिछले साल डीजेइंग शुरू की और पाया कि इससे न सिर्फ उनकी क्रिएटिविटी में फायदा हुआ, बल्कि वे काम पर फोकस भी कर पाते हैं। सतीश का भी यही दावा है। शौकिया डीजेइंग करने वाले फाउंडर्स में गोल्डमैन सैक के चीफ एक्जीक्यूटिव डेविड सोलोमन, बीबीसी के 'ड्रैगन्स डेन' शो के पैनलिस्ट स्टीवन बार्टलेट और 4 बिलियन डॉलर की एआई वीडियो क्रिएटर कंपनी सिंथेसिस के को-फाउंडर और चीफ एक्जीक्यूटिव विक्टर रिपरबेली शामिल हैं। शॉपिफाई के प्रेसिडेंट हार्ले फिंकेलस्टीन ने किशोरावस्था में डीजे कंपनी शुरू की थी और आज भी अकसर अपनी कंपनी के कॉरपोरेट इवेंट्स में डीजेइंग करते हैं। रोजमर्रा में हादी अपनी लॉ फर्म का मैनेजमेंट, नेतृत्व और सुपरविजन संभालते हैं। हालांकि अब वे केसवर्क नहीं देखते, लेकिन युवा कानूनी पेशेवरों को कॉन्ट्रैक्ट दिलाने में मदद करते हैं। वे कहते हैं, 'दिन में लॉ फर्म मैनेज करना और फिर डीजेइंग करना, दोनों के लिए समान स्किल चाहिए।' वे सही भी हैं। वकीलों और डीजे, दोनों को माहौल समझना पड़ता है, उसी स्थिति के अनुसार प्रतिक्रिया देनी पड़ती है। तात्कालिक परिस्थितियों से निपटना पड़ता है। चाहे अदालत में सुनवाई हो या क्लाइंट के साथ बिजनेस मीटिंग, दोनों में ही मौके के अनुसार ही खुद को ढालना पड़ता है। दिलचस्प यह है कि कुछ लोग 60 साल की उम्र में भी डीजेइंग शुरू करते हैं। जैसे, टीना वुड्स, जिन्हें डीजे टीना भी कहते हैं। उन्होंने ब्रिटेन में पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत हेल्थ इनोवेशन कंसल्टेंसी 'कोलाइडर हेल्थ' स्थापित की है। आज 62 की उम्र में टीना कहती हैं कि 'आंत्रप्रेन्योर होना बेहद अकेलेपन से भरा है और डीजे मुझे सामाजिक रूप से कनेक्ट रखता है।' ऐसे फाउंडर्स की सूची बहुत लंबी है, जो आज डीजेइंग कर रहे हैं या जिन्होंने कंपनी स्टार्ट करने से पहले डीजेइंग शुरू की थी। लेकिन यदि आप उनमें से हैं, जो दिनभर के कारोबार या हाई-प्रेशर जॉब के बाद घर जाकर सो जाते हैं और अगले दिन फिर वही शुरू करते हैं तो अगर आपको डीजेइंग असहज लगती है तो तनावमुक्त होने के लिए म्यूजिक का सहारा ले सकते हैं। फंडा यह है कि जीवन में या वर्कप्लेस पर अकेलेपन को मात देने के लिए आपको जरूर कोई तरीका खोजना चाहिए। किसी के साथ म्यूजिक सुनना भी एक थेरेपी है, जिसे आजमाया जा सकता है।एन. रघुरामन

राजनीतिक दलों और नेताओं के रिश्तों में खींचतान का दौर

बीते कुछ समय में शिवसेना के 6, तृणमूल के 20 और आप के 7 लोकसभा-राज्यसभा सांसद दूसरी पार्टियों में शामिल हुए हैं। तीनों ही मामलों में संबंधित दलों ने इन विलयों का विरोध किया

था। इसके बावजूद, दल-बदल विरोधी कानून के तहत ये वैध माने जाते हैं। इसके पीछे कौन-सा तकनीकी पेंच है? दल-बदल विरोधी कानून को तो एक वास्तविक समस्या से निपटने के लिए बनाया गया था। सांसद और विधायक बार-बार दल बदलकर दूसरी पार्टियों में शामिल हो जाते थे। हरियाणा के विधायक गया लाल ने तो एक ही दिन में तीन बार दल बदले थे। मंत्रिपद या अन्य लाभों के लालच में विधायकों को दल बदलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, जिससे निर्वाचित सरकारें अस्थिर हो जाती थीं। 1967-68 के दौरान ही विभिन्न विधानसभाओं में दल बदलने वाले 210 विधायकों में से 116 को मंत्री बना दिया गया था। इस पर रोक लगाने के लिए 1985 में संविधान की दसवीं अनुसूची जोड़ी गई। इसके तहत जनप्रतिनिधि जिस दल के टिकट पर निर्वाचित हुए हों, अगर वो उसे छोड़ते हैं, तो उनकी सदस्यता समाप्त हो जाएगी। इसका उद्देश्य स्पष्ट था- राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना और मतदाताओं के जनादेश की रक्षा करना। हालांकि, इस कानून ने राजनीतिक दलों और चुने हुए प्रतिनिधियों के सम्बंधों की प्रकृति भी बदल दी। दसवीं अनुसूची से पहले विधायकों और सांसदों के पास अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता थी। वे अपने विवेक, जनहित या अपने निर्वाचन क्षेत्र की आवश्यकताओं के आधार पर सदन में मतदान कर सकते थे। लेकिन दल-बदल कानून ने शक्ति-संतुलन राजनीतिक दलों के पक्ष में कर दिया। यदि कोई सांसद या विधायक पार्टी-व्हिप का उल्लंघन करता या पार्टी की सदस्यता छोड़ता, तो उसे डिसक्वालिफिकेशन का सामना करना पड़ सकता था। अर्थात् इस कानून के अंदर व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर दलगत अनुशासन को प्राथमिकता दी गई। परंतु कानून ने कुछ अपवाद भी स्वीकार किए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण था राजनीतिक दलों का विलय। इस प्रावधान के अनुसार, यदि किसी राजनीतिक दल का किसी अन्य दल में विलय हो जाए और उसे सदन में उस दल के दो-तिहाई सांसदों या विधायकों का समर्थन प्राप्त हो, तो ऐसे निर्वाचित प्रतिनिधियों को अयोग्यता से संरक्षण मिलेगा। कानून की परिकल्पना यह थी कि विलय की प्रक्रिया में राजनीतिक दल और उसके निर्वाचित प्रतिनिधि- दोनों की भूमिका होगी। हालांकि समय के साथ न्यायालयों ने इस प्रावधान की ऐसी व्याख्या बनाई, जो दल-बदल कानून के व्यापक उद्देश्य से अलग दिखाई देती है। न्यायालयों ने दो-तिहाई बहुमत की शर्त को ही पर्याप्त मानना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप यदि किसी दल के पर्याप्त संख्या में सांसद या विधायक एक साथ किसी अन्य दल में जाने का निर्णय लेते हैं, तो दसवीं अनुसूची के उद्देश्य से उसे विलय मान लिया जाता है, भले ही मूल दल अस्तित्व में बना रहे और इसका विरोध करे। उदाहरण के लिए, आम आदमी पार्टी एक स्वतंत्र दल के रूप में मौजूद है, लेकिन उसके दस में से सात राज्यसभा सांसद अब भाजपा के साथ हैं। इसी प्रकार तृणमूल आज भी सक्रिय है और उसने अपने सांसदों के विलय का विरोध किया है। फिर भी वर्तमान कानूनी व्याख्या के अनुसार, यदि आवश्यक संख्या पूरी हो जाती है, तो दल की आपत्ति निर्णायक नहीं रहेगी। यह एक विचित्र विरोधाभास रचता है। इस तरह के विलयों के राजनीतिक परिणाम गंभीर होते हैं। वे सदन में बहुमत का संतुलन बदल सकते हैं, महत्वपूर्ण विधेयकों पर मतदान को प्रभावित कर सकते हैं और सरकारों की स्थिरता को भी संकट में डाल सकते हैं। यह समस्या छोटे राज्यों और क्षेत्रीय दलों के लिए अधिक गंभीर है, जहां विधायकों की संख्या सीमित होती है। छोटी विधानसभाओं में दो-तिहाई का आंकड़ा पाना आसान होता है। लोकतंत्र में राजनीतिक दलों को महत्त्वपूर्ण माना गया था।

इसीलिए यदि कोई सांसद या विधायक अपने दल के विरुद्ध जाता, तो अपनी सदस्यता खो सकता था। किंतु दल-विलय के प्रश्न में राजनीतिक दल की इच्छा को लगभग अप्रासंगिक बना दिया गया है। (ये लेखकों के अपने विचार हैं, अर्घ्य सेनगुप्ता और स्वप्निल त्रिपाठी)

क्या सिस्टम को तकनीक से जोड़ने भर से सब ठीक हो जाएगा?

डिजिटल माध्यमों पर भरोसा करती दुनिया में नीट की भविष्य की परीक्षाओं का (21 जून को होने जा रही परीक्षा का नहीं)

कम्प्यूटराइज्ड होना शुभ संकेत है और साथ-साथ सिस्टम और जनता के संबंधों पर उस भरोसे का भी मरहम है, जो कमजोर पड़ता जा रहा है। लेकिन क्या सिस्टम को तकनीक से जोड़ने से सब ठीक हो जाएगा? क्या तकनीक भरोसे को बचा पाएगी? और फिर आइंदा लीक की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी? शायद हां, शायद नहीं! नीट परीक्षा को लेकर अभी भी कितने पैरेंट्स और परीक्षार्थी संशय की स्थिति में होंगे। नागरिकों के लिए यह जानना आसान नहीं होता है कि सरकार में उनके प्रतिनिधि क्या कर रहे हैं, हालांकि वे उनके काम-काज पर नजर बनाए रखते हैं। चुने हुए जनप्रतिनिधियों को तो वोट की मदद से पद से हटाया जा सकता है, लेकिन सरकारी कर्मचारी या सिविल सर्वेंट्स चुने हुए नहीं होते और इस तरह के नियंत्रण से सुरक्षित रहते हैं। तब नागरिकों को सरकारी एजेंसियों और उनके कर्मचारियों पर भरोसा रखना पड़ता है कि वे उनके हित में ही काम करेंगे। लेकिन यह सत्य है कि सिस्टम तो उनके भरोसे को बचा नहीं पा रहा है। पेपर लीक की घटना ने यह प्रश्न हम सभी के सामने रखा कि आखिर क्या किया जाए, जिससे यह दुबारा न हो? जब भी कोई ईमानदार व्यक्ति इस्तीफा देता है, तो शिकायत यही होती है कि व्यवस्था ईमानदारी का साथ नहीं देती और इसी वजह से व्यक्ति खुद को हमेशा अलग-थलग समझने लगता है, जबकि चारों ओर खामियां ही खामियां हैं।

तो क्यों नहीं इस सिस्टम को समझा जाए और यह भी खंगाला जाए कि इस सिस्टम को और सुदृढ़ कैसे किया जा सकता है? इस संबंध में यह तर्क रहा है कि सरकारी अधिकारियों की सही भूमिका संरक्षक की होनी चाहिए, यानी एक प्रभावी और नैतिक प्रतिनिधि के तौर पर काम करके जनता का भरोसा जीतने की प्रशासक की इच्छा और उसकी क्षमता से लैस व्यक्तित्व।

सिस्टम पर भरोसे को बचाए रखने के लिए सिर्फ एक कुशल और पेशेवर सिविल सर्वेंट होना ही नहीं काफी है, बल्कि न्याय और परोपकार के नैतिक मानदंडों से प्रेरित भी जरूरी है। हाल में यूपीएससी ने अपनी पीटी परीक्षा में ऐसे प्रश्न पूछे, जो मेन्स में पूछे जाने वाले एथिक्स के पेपर जैसे थे। मानो पहले ही चरण में यूपीएससी अपने परीक्षार्थियों के नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को परखना चाह रहा था। क्योंकि सिस्टम उन नैतिक निर्णयों से ही उस भरोसे को बनाए रख पाता है, जो लोकतंत्र का आधार है।

तो क्या 21 जून को होने वाली नीट और अन्य परीक्षाएं त्रुटिरहित हो पाएंगी और किसी भी तरह के लीक से सुरक्षित रहेंगी? क्या सिस्टम भरोसे को कायम रख पाएगा? क्या भविष्य की कम्प्यूटराइज्ड परीक्षा सिस्टम के नायकों की साख को और पारदर्शी बनाएगी? इसका उत्तर तो समय के ही पास है।

लेकिन यह तो निश्चित है कि सबकुछ संरक्षित करना, उस भरोसे को जीवित रखना अब इतना आसान नहीं होगा। शोधकर्ताओं ने पाया है कि जिन समाजों में आपसी विश्वास कम होता है, वहां नैतिक मूल्य साझा नहीं किए जाते और इसलिए नैतिक सहमति का अभाव होता है। ऐसे समाजों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू लोगों के सामाजिक-राजनीतिक विश्वास में लगातार आ रही गिरावट है। यदि राजनीति खुशी और एकता का माहौल बनाए, राजनीति को सेवा के एक माध्यम के रूप में परिभाषित किया जाए और सिस्टम नैतिकता को बढ़ावा दे तो भरोसा एक बिल्कुल ही पारदर्शी रंग में नजर आएगा। सिस्टम में भरोसे को फिर से स्थापित करने के लिए तकनीक का तो सहारा लेना ही पड़ेगा, साथ ही व्यवस्था को चलाने वाले नायकों को भी उस ईमानदारी या सत्यनिष्ठा को अपनाना होगा, जिससे वे खुद को नैतिक दुविधा से बाहर निकाल सकें। नीट की कम्प्यूटराइज्ड माध्यम से होने वाली परीक्षा और यूपीएससी की पीटी परीक्षा में नैतिक प्रक्रिया से जुड़े प्रश्न उस भरोसे को निःसंदेह मजबूत बनाएंगे। नैतिकता का लोकेशन परिधि में नहीं बल्कि केंद्र में होता है और सिस्टम इसी के गुरुत्व से चलता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,नंदितेश निलय)

अपनी 250वीं सालगिरह से पहले पसोपेश में है अमेरिका

आज (4 जुलाई को) अमेरिका अपना 250वां जन्मदिन मनाएगा। लेकिन जो अवसर उत्सव का होना चाहिए था, वह आत्म-अवलोकन की घड़ी जैसा बन गया है। पूरी दुनिया अमेरिका को एक सफल देश के तौर पर देखती है, लेकिन खुद अमेरिकी अभी निराश मनःस्थिति में हैं। गैलप के एक सर्वे

के अनुसार वर्ष 2000 में लगभग 55फीसदी अमेरिकी मानते थे कि देश की सफलता देखकर अमेरिका के संस्थापक खुश होंगे। लेकिन आज महज 19फीसदी ही ऐसा सोचते हैं। दूसरे शब्दों में, अमेरिका ने अपने संस्थापकों की गरिमा घटाई है। पहली नजर में इसका दोष ट्रम्प के भ्रष्ट प्रशासन पर मढ़ा जा सकता है। यह सच भी है कि बीते एक दशक में ट्रम्प के उभार, पतन और फिर से उभार ने अमेरिकी राजनीति में उथल-पुथल मचाई है। लेकिन समस्याएं इससे कहीं ज्यादा जटिल हैं, जो अमरीकी समाज के विभाजनों में छिपी हैं। एक ओर 'मागा' का नेटिविस्ट और दक्षिणपंथी आंदोलन है, जो 'ट्रम्प-भक्तों' और 'अमेरिका-फर्स्ट' समर्थकों के बीच बंटता जा रहा है। ट्रम्प के भक्त आंख मूंदकर उन्हें समर्थन देते हैं, जबकि अमेरिका-फर्स्ट के समर्थक राष्ट्रवादी विचारधारा वाले हैं और ट्रम्प की कई नीतियों पर असहमत होते हैं। 'अमेरिका-फर्स्ट' आंदोलन के प्रभावशाली चेहरों में शुमार टकर कार्लसन और मार्जोरी टेलर ग्रीन कभी मागा मूवमेंट के भी मजबूत समर्थक थे, लेकिन अब उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी छोड़ दी है। अब वे ट्रम्प की नीतियों और ईरान के खिलाफ युद्ध को अपने ही आंदोलन से विश्वासघात बता रहे हैं।

ट्रम्प की वापसी में मदद करने वाले थियो वॉन, टिम डिलन और कैंडेस ओवेन्स जैसे पॉडकास्टर भी अब ट्रम्प विरोधी हो चुके हैं।

दूसरी तरफ डेमोक्रेटिक पार्टी भी सोशलिस्ट ताकतों के दबाव में है। न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी द्वारा समर्थित तीन उम्मीदवारों की डेमोक्रेटिक प्राइमरी में जीत इसका ताजा संकेत है। न्यूयॉर्क के कुछ अपार्टमेंट्स का किराया फ्रीज करने का निर्णय भी वहां के 25फीसदी निवासियों को फायदा देगा।

पिछले साल गैलप सर्वे में सामने आया कि डेमोक्रेट्स पूंजीवाद की तुलना में समाजवाद को अधिक पसंद करते हैं। 30 से कम आयु के लोगों में विचारधारा का यह अंतर सर्वाधिक है। अमेरिकियों में इजराइल के प्रति घटता समर्थन घरेलू उथल-पुथल का एक और संकेत है। ताकतवर लॉबियों के समर्थन के कारण इजराइल को पहले डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन दोनों पार्टियों का मजबूत समर्थन प्राप्त था। लेकिन हालात अब बदले हुए हैं। 60फीसदी अमेरिकी इजराइल को नकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं, जिनमें लगभग 80फीसदी डेमोक्रेट्स हैं। एआई एक और क्षेत्र है, जिस पर विभाजन दिख रहा है।

इस पर नियंत्रण को लेकर डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकंस में मजबूत श्रमिक-समर्थक गठबंधन बन रहे हैं। एक ओर वो लोग हैं, जो उत्पादकता बढ़ाने के लिए एआई का उपयोग कर रहे हैं, दूसरी ओर वो हैं, जिनकी नौकरियां ऑटोमेशन के चलते खतरे में हैं।

एआई डेटा सेंटरों और पावर प्लांटों के खिलाफ भी विरोध बढ़ रहा है।

लोगों की आपत्ति है कि इससे बिजली का बिल और शोरगुल बढ़ेगा। इन सभी विभाजनों का असल कारण एक ऐसी अर्थव्यवस्था है, जो आम अमेरिकियों में भरोसा खो चुकी है।

दशकों तक अमेरिका ने दुनिया को, और खुद के लोगों को उन्नति का सपना बेचा था।

वही सपना अब गंभीर सवालों में घिरा है। वेतन वृद्धि, संपत्तियों की कीमतों में हुई बढ़ोतरी की तुलना में पिछड़ गई।यानी जिन लोगों के पास संपत्ति और शेयर हैं, वे और अमीर हो गए। जबकि वेतन पर निर्भर लोग पीछे छूट गए। लंबे समय तक अमेरिकी लोकतंत्र का आधार रहा मध्यम वर्ग सिकुड़ रहा है। एक पूरी पीढ़ी छात्र ऋण के बोझ

के सपने को दूर की कौड़ी बना दिया है। आज हम जो देख रहे हैं, वह एक अराजक प्रक्रिया है, जिसे ट्रम्प ने जन्म दिया है। उन्होंने ऐसी पॉपुलिस्ट ताकतों को बढ़ावा दिया, जो अब डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन, दोनों ही दलों के स्थापित ढांचे को कमजोर कर रही हैं।

250 वर्ष का अमेरिका आज न तो निर्णायक पतन की ओर अग्रसर है, न ही पूरी तरह स्वस्थ है। वह उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है और दुनिया चिंता के साथ उसे देख रही है।

250 वर्ष का अमेरिका आज न तो निर्णायक पतन की ओर अग्रसर है, न ही पूरी तरह से स्वस्थ है। उसका समाज बंटा हुआ है और राजनीति दुविधाग्रस्त है। वह उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है और दुनिया चिंता के साथ उसे देख रही है। (ये लेखक के अपने विचार हैं)मनोज जोशी

यूएन ऑफिस के बाहर आग लगाकर जान दी,बौद्ध भिक्षु के वेष में था व्यक्ति,पर्चे मिले-लिखा था- चीन को तिब्बत से निकाला

न्यूयॉर्क सिटी। 2009 से अब तक 150 से ज्यादा तिब्बतियों ने आत्मदाह किया:-चीन के तिब्बत पर नियंत्रण के विरोध में 2009 से अब

तक 150 से ज्यादा तिब्बती खुद को आग लगाकर जान दे चुके हैं। इनमें बौद्ध भिक्षु, साध्वियां, छात्र, किसान और आम लोग शामिल हैं। पहला चर्चित मामला फरवरी 2009 में सामने आया, जब युवा भिक्षु तपे ने खुद को आग लगा ली थी। मार्च 2011 में किरती मठ के 21 वर्षीय भिक्षु फुंटसोग ने आत्मदाह किया। इसके बाद 2012 और 2013 में ऐसी घटनाएं सबसे ज्यादा हुईं।चीन ने 2014 के बाद तिब्बत में सुरक्षा व्यवस्था और निगरानी कड़ी कर दी। इसके बाद आत्मदाह की घटनाओं में कमी आई, लेकिन विरोध पूरी तरह थमा नहीं। तिब्बती संगठनों का कहना है कि लोग चीन के शासन का विरोध जताने, दलाई लामा की तिब्बत वापसी, धार्मिक और सांस्कृतिक आजादी, तिब्बती भाषा और पहचान बचाने की मांग को लेकर यह कदम उठाते हैं। कई लोगों ने खुद को आग लगाने से पहले 'तिब्बत को आजाद करो', 'दलाई लामा को वापस आने दो' और 'चीन तिब्बत छोड़ो' जैसे संदेश भी छोड़े। चीन का कहना है कि इन घटनाओं के पीछे निर्वासित तिब्बती नेतृत्व लोगों को भड़काता है। वहीं, निर्वासित तिब्बती प्रशासन इस आरोप को खारिज करता है। उसका कहना है कि लोग चीन की नीतियों और लगातार बढ़ते दबाव से परेशान होकर अपनी जान दे रहे हैं। पांच सवाल-जवाब में पूरा तिब्बत विवाद:-सवाल 1: तिब्बत विवाद क्या है? जवाबः तिब्बत विवाद चीन और तिब्बती समुदाय के बीच तिब्बत की राजनीतिक स्थिति, शासन और सांस्कृतिक पहचान को लेकर है। चीन तिब्बत को अपना अभिन्न हिस्सा मानता है। वहीं, निर्वासित तिब्बती नेतृत्व का कहना है कि तिब्बत लंबे समय तक अपनी अलग पहचान और शासन व्यवस्था वाला क्षेत्र रहा है। उनका आरोप है कि 1950 में चीनी सेना के प्रवेश और 1951 के समझौते के बाद तिब्बत पर चीन का नियंत्रण स्थापित हुआ। सवाल 2: चीन तिब्बत को अपना हिस्सा क्यों मानता है? जवाबः चीन का कहना है कि 13वीं शताब्दी में युआन (मंगोल) राजवंश के समय से तिब्बत चीन का हिस्सा रहा है। चीन के अनुसार, 23 मई 1951 को हुए 17-पॉइंट एग्रीमेंट के जरिए तिब्बत आधिकारिक रूप से चीन में शामिल हुआ। बीजिंग इसे 'तिब्बत की शांतिपूर्ण मुक्ति' (पीसफुल लिबरेशन) कहता है और दावा करता है कि उसके बाद तिब्बत में सड़कें, स्कूल, अस्पताल और अन्य बुनियादी सुविधाओं का विकास हुआ।सवाल 3: तिब्बती क्या कहते हैं और उनकी मांग क्या है? जवाबः तिब्बती समुदाय का कहना है कि 1912 में 13वें दलाई लामा ने तिब्बत को स्वतंत्र घोषित किया था और कई दशकों तक वहां अलग प्रशासन चलता रहा। उनका आरोप है कि 1951 का 17-पॉइंट एग्रीमेंट दबाव में कराया गया था, इसलिए वे इसे वैध नहीं मानते। वर्तमान में दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती नेतृत्व पूर्ण स्वतंत्रता के बजाय 'वास्तविक स्वायत्तता' की मांग करते हैं, ताकि तिब्बती भाषा, धर्म, संस्कृति और स्थानीय प्रशासन की रक्षा हो सके। हालांकि, कुछ तिब्बती संगठन आज भी पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करते हैं। सवाल 4: निर्वासित तिब्बती सरकार क्या है? जवाबः 1959 में चीन के खिलाफ विद्रोह के बाद 14वें दलाई लामा भारत आ गए। इसके बाद हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में सेंट्रल टिबेटन एडमिनिस्ट्रेशन (सीटीए) की स्थापना हुई। इसे आम बोलचाल में निर्वासित तिब्बती सरकार कहा जाता है। यह दुनिया भर में बसे तिब्बती शरणार्थियों के शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक मामलों का संचालन करती है। इसका अपना निर्वाचित प्रमुख (सिक्योंग) और संसद भी है। हालांकि, भारत और संयुक्त राष्ट्र सहित कोई भी देश इसे संप्रभु सरकार के रूप में मान्यता नहीं देता।

सवाल 5: भारत का रुख क्या है? जवाबः भारत तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र को चीन का हिस्सा मानता है। वहीं, 1959 से भारत ने दलाई लामा और हजारों तिब्बती शरणार्थियों को मानवीय आधार पर शरण दी हुई है। धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती प्रशासन भी यहीं से काम करता है। भारत का कहना है कि उसकी जमीन का इस्तेमाल चीन-विरोधी राजनीतिक गतिविधियों के लिए नहीं होना चाहिए, लेकिन तिब्बती शरणार्थियों को धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियां करने की अनुमति है। 1959 में चीन छोड़कर भारत आए थे मौजूदा दलाई लामा:-मौजूदा 14वें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो 1959 में तिब्बत छोड़कर भारत आए थे। उस समय तिब्बत में चीन के खिलाफ बड़ा विद्रोह चल रहा था और हालात तेजी से बिगड़ रहे थे। दलाई लामा की आत्मकथा के मुताबिक, मार्च 1959 में चीनी सेना उनके पोताला महल तक पहुंच गई थी। उन्हें आशंका थी कि उन्हें गिरफ्तार या मार दिया जाएगा। दलाई लामा ने लिखा है कि वे साधारण सैनिक का वेश पहनकर रात के अंधेरे में महल से निकले। उनके साथ परिवार के सदस्य, अंगरक्षक और कुछ करीबी सहयोगी भी थे। इसके बाद करीब दो हफ्तों तक वे पहाड़ों, गांवों और बौद्ध मठों में छिपते हुए भारत की ओर बढ़ते रहे। रास्ते में कई स्थानीय लोगों और मठों ने उन्हें शरण और मदद दी। 31 मार्च 1959 को दलाई लामा अरुणाचल प्रदेश (तब नॉर्थ-ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी) के रास्ते भारत पहुंचे। 2 अप्रैल को भारत सरकार ने उनका औपचारिक स्वागत किया और 3 अप्रैल को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भारत में राजनीतिक शरण देने का ऐलान किया।

भारत में भी दलाई लामा को शरण देने का विरोध हुआ:-उस समय नेहरू के इस फैसले का कुछ नेताओं ने विरोध भी किया था। उनका तर्क था कि इससे चीन के साथ भारत के रिश्ते खराब हो सकते हैं। इसके बावजूद भारत सरकार अपने फैसले पर कायम रही और दलाई लामा को शरण दी। भारत आने के बाद दलाई लामा को पहले असम के तेजपुर में ठहराया गया। इसके बाद वे कुछ समय मसूरी में रहे। 1960 में वे हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला चले गए, जहां आज भी उनका निवास है। यहीं से निर्वासित तिब्बती प्रशासन भी काम करता है। दलाई लामा के भारत आने के बाद से तिब्बत का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और ज्यादा चर्चा में आया। चीन आज भी उन्हें अलगाववादी मानता है, जबकि दलाई लामा लगातार कहते रहे हैं कि वे तिब्बत की आजादी नहीं, बल्कि वहां के लोगों के लिए वास्तविक स्वायत्तता चाहते हैं।

अमेरिका ढाई सौ साल के लिए टाइम कैप्सूल दफन करेगा,408 किलो वजन, इसमें व्हेल की हड्डी से एआई की भविष्यवाणी तक

वॉशिंगटन डीसी। 4 जुलाई को अमेरिका की आजादी के 250 साल पूरे होने के मौके पर 408 किलो का एक टाइम कैप्सूल जमीन में दफनाया जाएगा। इसे फिलाडेल्फिया के इंडिपेंडेंस नेशनल हिस्टोरिकल पार्क में दफनाया जाएगा और 250 साल

बाद यानी 2276 में खोला जाएगा। इसकी जानकारी नेशनल पार्क सर्विस के आधिकारिक रिकॉर्ड में भी दर्ज की गई है, ताकि 250 साल बाद आने वाली पीढ़ियां इसे ढूंढ़ सकें और इसके बारे में जान सकें। इस कैप्सूल में 50 राज्यों और आम लोगों की ओर से चुनी गई यादगार चीजें रखी गई हैं, जिसमें व्हेल की हड्डी, दुनिया के सबसे बड़े जिप्सम रेगिस्तान की रेत, राइट बंधुओं के विमान का कपड़ा, एआई की भविष्यवाणी और कई ऐतिहासिक दस्तावेज शामिल हैं। टाइम कैप्सूल बंद पेटी या कंटेनर होता है, जिसमें किसी दौर की चीजें सुरक्षित रखी जाती हैं, ताकि भविष्य की पीढ़ियां उस समय के समाज, तकनीक, संस्कृति और जीवन को समझ सकें। कैप्सुल सुरक्षित रखने के लिए अपनाई गई खास तकनीकें:-टाइम कैप्सूल बनाना जितना मुश्किल नहीं था, उससे बड़ी चुनौती उसे 250 साल तक सुरक्षित रखना था। वैज्ञानिकों के सामने सबसे बड़ा सवाल था कि जमीन के नीचे रखी चीजें ढाई सौ साल बाद भी सुरक्षित कैसे मिले। इस वजह से प्रोजेक्ट से जुड़े कई विशेषज्ञों को इसमें शामिल किया गया। कई साल की रिसर्च के बाद ऐसा डिजाइन तैयार किया गया, जो पानी, नमी, जंग और मौसम के असर से कैप्सूल को बचा सके। यह कैप्सूल चौकोर नहीं, बल्कि बेलन (सिलेंडर) के आकार का है। वैज्ञानिकों के अनुसार चौकोर डिब्बों के कोने समय के साथ कमजोर पड़ जाते हैं और वहीं से पानी अंदर जाने का खतरा सबसे ज्यादा रहता है।टाइम कैप्सूल को कैसे सील किया गया? कैप्सूल को कार्यक्रम के दिन सील नहीं किया जाएगा। इसे पहले ही पूरी तरह सील किया जा चुका है। 4 जुलाई को इसे सिर्फ फिलाडेल्फिया में जमीन के नीचे स्थापित किया जाएगा। कैप्सूल को सील करने के लिए खास धातु इंडियम का इस्तेमाल किया गया है। यह नरम धातु ढक्कन बंद करते समय छोटी-से-छोटी दरार भर देती है। इससे कैप्सूल पूरी तरह सील रहता है और अंदर रखा सामान लंबे समय तक सुरक्षित रहता है। अगर कैप्सूल में बहुत ज्यादा नमी होती तो कागज और दूसरी वस्तुएं खराब हो सकती थीं। वहीं नमी पूरी तरह खत्म करने पर कुछ चीजें सूखकर टूट सकती थीं। इसलिए वैज्ञानिकों ने कैप्सूल के अंदर 35फीसदी नमी रखी है। कैप्सूल को करीब 10 फीट नीचे दफनाया जाएगा। इस गहराई पर तापमान में उतार-चढ़ाव कम होता है। तेज गर्मी, कड़ाके की ठंड और सतह पर आने वाले तूफानों का असर भी बहुत कम पड़ता है। 250 साल तक न पानी पहुंचेगा, न जंग लगेगी:-वैज्ञानिकों के मुताबिक, जमीन के नीचे रखे जाने वाले किसी भी टाइम कैप्सूल का सबसे बड़ा दुश्मन पानी होता है। इसीलिए कैप्सूल के ऊपर एक और स्टील का सिलेंडर लगाया जाएगा। दोनों के बीच हवा की एक परत रहेगी, जो बाहर से आने वाले पानी को रोकने में मदद करेगी। यह ठीक उसी सिद्धांत पर काम करेगा, जैसे पानी में उल्टी बाल्टी डुबोने पर उसके अंदर हवा फंसी रहती है। अगर भविष्य में भूजल का स्तर बढ़ जाए या बाढ़ आ जाए, तब भी बेल जार के भीतर मौजूद हवा पानी को कैप्सूल तक पहुंचने से रोकेगी।

अमेरिका ने ईरान को इजराइली साजिश की चेतावनी दी,बातचीत में शामिल अराघची और गालिबाफ की हत्या हो सकती हैं

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका-ईरान के बीच अप्रैल में शुरू हुई बातचीत के दौरान अमेरिका को डर था कि इजराइल, ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची और संसद अध्यक्ष मोहम्मद बाकर गालिबाफ को निशाना बना सकता है। इसी वजह से अमेरिका ने मिडिल-ईस्ट के कुछ सहयोगी देशों के जरिए तेहरान को सतर्क रहने का संदेश भिजवाया। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका को डर था कि अगर दोनों वार्ताकारों की हत्या हुई तो युद्धविराम और शांति प्रक्रिया टूट जाएगी। उस समय ट्रम्प प्रशासन होर्मुज स्ट्रेट खोलने और ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर समझौते की कोशिश कर रहा था।रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान में होने वाली एक बैठक से पहले भी ईरान को हमले का खतरा था। इसी कारण पाकिस्तान ने ईरानी प्रतिनिधिमंडल के विमान को फाइटर जेट की सुरक्षा में इस्लामाबाद तक पहुंचाया। लौटते समय भी सुरक्षा अलर्ट मिलने पर विमान की मशहद में इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई और डेलिगेशन सड़क के जरिए तेहरान पहुंचा।पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स:-1. अमेरिका-ईरान में अगली वार्ता खामेनेई के अंतिम संस्कार के बादः दोहा में हुई

बातचीत के बाद कतर ने बताया कि दोनों पक्ष पूर्व सुप्रीम लीडर के अंतिम संस्कार के बाद जल्द अगले दौर की वार्ता करेंगे। 2. यूएन पहुंचा ईरान-इजराइल विवादः ईरान ने इजराइल पर सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई को धमकी देने का आरोप लगाते हुए संयुक्त राष्ट्र में शिकायत दर्ज कराई। 3. ईरान हाई अलर्ट पर, 2 करोड़ लोगों के पहुंचने का दावाः ईरान ने खामेनेई के अंतिम संस्कार से पहले सेना की तैनाती बढ़ी। कार्यक्रम में 30 देशों के प्रतिनिधि और करीब 2 करोड़ लोग शामिल होंगे। 4. होर्मुज पर ईरान की अमेरिका को चेतावनीः ईरान ने कहा है कि होर्मुज हमारा इलाका है, अमेरिकी दखल बर्दाश्त नहीं करेंगे। सभी जहाजों को तय समुद्री मार्ग अपनाने को कहा। 5. ईरान ने आईएईए को परमाणु ठिकानों की जांच से रोकाः ईरान ने कहा है कि फोर्डो, नतांज और इस्फहान परमाणु साइट्स पर आईएईए के निरीक्षकों को एंट्री नहीं मिलेगी। 6 दिन चलेगा खामेनेई का अंतिम संस्कार:-खामेनेई का अंतिम संस्कार 4 से 9 जुलाई तक चलेगा। ईरानी अधिकारियों के मुताबिक, यह देश के इतिहास के सबसे बड़े राजकीय अंतिम संस्कारों में शामिल होगा। समारोह में 1.5 से 2 करोड़ लोगों के पहुंचने का अनुमान है। इसे देखते हुए पूरे देश में हाई अलर्ट घोषित किया गया है। अंतिम संस्कार में 30 से ज्यादा देशों के नेता और प्रतिनिधि, जबकि 90 देशों के धार्मिक प्रतिनिधि शामिल होंगे। पाकिस्तान, रूस और चीन समेत कई देशों ने अपने प्रतिनिधिमंडल भेजने की पुष्टि की है। लेबनान के 1 लाख बच्चों की पढ़ाई पर संकट:-संयुक्त राष्ट्र की बाल एजेंसी यूनिसेफ ने चेतावनी दी है कि लेबनान में 1 लाख से ज्यादा बच्चे इस साल स्कूल नहीं जा पाएंगे, अगर हालिया संघर्ष में क्षतिग्रस्त हुए स्कूलों की जल्द मरम्मत नहीं की गई। जून में लेबनान के शिक्षा मंत्रालय और यूनिसेफ की संयुक्त समीक्षा में पाया गया कि इजराइल-हिजबुल्लाह संघर्ष के दौरान देश के 340 स्कूल क्षतिग्रस्त हुए, जिनमें 17 स्कूल पूरी तरह नष्ट हो गए।

काशी-विश्वनाथ मंदिर गेट पर कार्बाइन से गोलियां चलीं,सीसीटीवी जवान पकड़े था, अचानक फायरिंग हुई

वाराणसी। काशी विश्वनाथ मंदिर के गेट पर शनिवार सुबह साढ़े 7 बजे ड्यूटी के दौरान पीएसी जवान के हाथ से कार्बाइन चल गई। करीब

दो राउंड फायर हो गए। गनीमत रही कि गोलियां सीधे सड़क पर जा लगीं। इसके बाद सड़क की गिट्टी उखड़कर लगने से 3 लोग घायल हो गए। अचानक भीड़ के बीच गोलियां चलने से वहां भगदड़ जैसा माहौल बन गया। कुछ देर किसी को समझ ही नहीं आया कि क्या हुआ। गोलियों की आवाज सुनकर सुरक्षाकर्मी अलर्ट हो गए। उन्होंने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला। लोगों को बताया कि गलती से गोलियां चल गई हैं। बाकी, सबठीक है। पुलिसकर्मियों ने आनन-फानन में तीनों घायल निक्की गुप्ता, रामबाबू और विकास यादव को अस्पताल पहुंचाया। ये सभी मंदिर के बाहर माला-फूल बेचते हैं। डॉक्टरों के मुताबिक, सभी ठीक हैं। खतरे से बाहर हैं। पत्थर के टुकड़े उनको लगे हैं। हादसा काशी विश्वनाथ मंदिर के वीआईपी गेट नंबर-4 पर हुआ।

खामेनेई के अंतिम संस्कार में बेटे मुजतबा नहीं पहुंचे,सैकड़ो देशों के नेता शामिल, रूस, चीन, भारत ने टॉप लीडर्स नहीं भेजे

तेहरान। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई की अंतिम विदाई की रस्में शुरू

हो गई हैं। ईरानी राष्ट्रपति मसूद पजशकियान समेत देश की टॉप लीडरशिप शुक्रवार को तेहरान में खामेनेई को श्रद्धांजलि देने पहुंचा था। इस दौरान सुरक्षा वजहों से अयातुल्लाह अली खामेनेई के बेटे मुजतबा खामेनेई शामिल नहीं हुए। अंतिम संस्कार के कार्यक्रमों में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। हालांकि रूस, चीन, भारत और तुर्किये जैसे देशों के टॉप लीडर्स ने इससे दूरी बरती। ईरान की तरफ से न्योता भेजे जाने के बावजूद इन्होंने अपने निचले स्तर के प्रतिनिधियों को भेजा। हालांकि पाकिस्तान, इराक, आर्मेनिया,ताजिकिस्तान, जॉर्जिया जैसे देशों के टॉप लीडर्स समारोह में पहुंचे। वहीं, भारत की तरफ से आधिकारिक तौर पर विदेश राज्य मंत्री पबित्र मार्गेरिटा और बिहार के राज्यपाल सैयद अता हसनैन शामिल हुए। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स:-खामेनेई के अंतिम संस्कार की शुरुआतः ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर खामेनेई का ताबूत तेहरान के इमाम खुमैनी ग्रैंड मुसल्ला पहुंचाया गया। यहां उनके अंतिम संस्कार के कार्यक्रम में कई देशों के प्रतिनिधिमंडल शामिल हुए। अली खामेनेई के साथ उनकी 14 महीने की पोती, बेटी, पत्नी और दामाद को भी अंतिम श्रद्धांजलि दी गई। अंतिम संस्कार के लिए तेहरान में कड़ी सुरक्षाः खामेनेई के अंतिम संस्कार को लेकर तेहरान की सड़कों पर सेना और पुलिस की भारी तैनाती की गई है। सभी मुख्य सड़कों, चौराहों और सरकारी इमारतों के बाहर सेना और पुलिस बल तैनात है। मेन रोड्स पर मिलिट्री गाड़ियां पहरा दे रही हैं। आम लोगों के लिए खास इंतजामः खामेनेई के अंतिम संस्कार में शामिल आम लोगों के लिए तेहरान में मेट्रो और सरकारी बसें मुफ्त रहीं। साथ ही होटल किराए में 50फीसदी की छूट और स्कूलों-मस्जिदों में ठहरने की व्यवस्था की गई। दूसरे शहरों से लोगों को लाने के लिए स्पेशल ट्रेनें भी चलाई गईं। खामेनेई की अंतिम यात्रा 5 शहरों से गुजरेगीः अली खामेनेई की अंतिम यात्रा पहले ईरान के तेहरान, कोम से इराक के कर्बला, नजफ से होकर गुजरेगी। आखिर में 9 जुलाई को मशहद में सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा। अंतिम संस्कार के बाद अमेरिका-ईरान वार्ता फिर शुरू होगीः कतर ने बताया कि खामेनेई के अंतिम संस्कार के बाद अमेरिका-ईरान वार्ता का अगला दौर फिर शुरू होगा। वहीं ईरान ने आईएइए को फोर्डो, नतांज और इस्फहान परमाणु ठिकानों के निरीक्षण की अनुमति देने से इनकार कर दिया है।पाकिस्तानी आर्मी चीफ मुनीर ने ईरानी विदेश मंत्री से मुलाकात की:-पाकिस्तान के आर्मी चीफ असीम मुनीर ने शुक्रवार को तेहरान में ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची से मुलाकात की। असीम मुनीर पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए तेहरान पहुंचे थे। मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने बातचीत की, हालांकि बैठक के एजेंडे का आधिकारिक ब्योरा सामने नहीं आया।ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (ध्ंउण) की एयरोस्पेस फोर्स के चीफ माजिद मौसवी शनिवार को तेहरान में खामेनेई के ताबूत के पास श्रद्धांजलि देते नजर आए। मौसवी लंबे समय बाद सार्वजनिक रूप से दिखाई दिए। उनकी मौजूदगी को खास माना जा रहा है, क्योंकि वे आमतौर पर सार्वजनिक कार्यक्रमों में बहुत कम नजर आते हैं। अंतिम संस्कार से जुड़े 3 इंटरस्टिंग फैक्ट्स:-1. शव को सफेद तितलियों के बीच रखा गया-ताबूत को चारों तरफ नीचे लाल ट्यूलिप के फूल और हवा में लटकी सफेद तितलियों के बीच रखा गया है। शिया समुदाय में लाल फूल को शहादत और अन्याय के खिलाफ बहे खून का प्रतीक माना जाता है। वहीं, हवा में उड़ती सफेद तितलियां शहीद की पवित्र आत्मा को दर्शाती हैं, जो पार्थिव शरीर को छोड़कर जन्नत की ओर उड़ान भर चुकी है। 2. बिना किसी रासायनिक लेप के शव रखा गया:-इस्लाम में शव पर रासायनिक लेप लगाने की मनाही है। इसलिए, खामेनेई के पार्थिव शरीर को चार महीनों तक बिना किसी केमिकल के, सिर्फ एक रेफ्रिजेरेटेड कोल्ड स्टोरेज में पूरी रखा गया। 3. शोक मनाने आए लोगों के लिए 5 करोड़ रोटियां बनेंगी:-ईरानी मीडिया के मुताबिक, शोक मनाने वालों को खाना खिलाने के लिए 5 करोड़ रोटियां बनाई जाएंगी। राजधानी तेहरान में 16 मोबाइल बेकरी तैनात की जाएंगी।तेहरान में खामेनेई को अंतिम विदाई देने के लिए सरकारी समारोह शुरू हो गए हैं। ईरानी मीडिया के मुताबिक, तेहरान के मुसल्ला परिसर और आसपास की सड़कों पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। लाखों लोगों के अंतिम दर्शन के लिए मुसल्ला का मुख्य दरवाजा खोल दिया गया है। ईरान के सरकारी मीडिया के मुताबिक, पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं। इन प्रमुख देशों के नेता पहुंचे:-पाकिस्तानः शहबाज शरीफ-प्रधानमंत्री और आसिम मुनीर-आर्मी चीफ-ताजिकिस्तानः इमोमाली रहमान- राष्ट्रपति-आर्मेनियाः निकोल पाशिनयान-प्रधानमंत्री जॉर्जियाः मिखाइल

कावेलाशविली- राष्ट्रपति इराकः नजर अमीदी- राष्ट्रपति तुर्कमेनिस्तानः गुरबांगुली बर्दीमुहामेदोव- पूर्व राष्ट्रपति तुर्कियेः जेवदेत यिलमाज- उपराष्ट्रपति रूसः दिमित्री मेदवेदेव- पूर्व राष्ट्रपति चीनः हे वेई- चीन की संसद (नेशनल पीपुल्स कांग्रेस) की स्थायी समिति के उपाध्यक्ष 28 फरवरी को खामेनेई परिवार के कौन-कौन सदस्य मारे गए? ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई और उनकी पोती के ताबूत। खामेनेई के ताबूत पर काली पगड़ी रखी गई थी। यह पगड़ी उन शिया धर्मगुरुओं की पहचान मानी जाती है, जो खुद को पैगंबर मोहम्मद का वंशज बताते हैं। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई और उनकी पोती के ताबूत। खामेनेई के ताबूत पर काली पगड़ी रखी गई थी। यह पगड़ी उन शिया धर्मगुरुओं की पहचान मानी जाती है, जो खुद को पैगंबर मोहम्मद का वंशज बताते हैं। बुशरा खामेनेई(बेटी): आयतुल्लाह अली खामेनेई की बेटी थीं, जो हमले के वक्त मौजूद थीं। मिसबाह बाघेरी कनी (दामाद): खामेनेई के दामाद थे। जहरा मोहम्मदी गोलपायगानी (पोती/नातिन): वह बुशरा खामेनेई की छोटी बेटी थीं। जहरा हद्दाद-आदेल (बहू): खामेनेई के बेटे मुजतबा खामेनेई की पत्नी थीं। खामेनेई की अंतिम संस्कार से जुड़े 3 सवाल-जवाब 1. चार महीने की देरी क्यों हुई? जब खामेनेई की मौत हुई, तब ईरान-अमेरिका युद्ध चल रहा था। ईरान के कई हिस्सों में लगातार बमबारी हो रही थी। ऐसे में शव यात्रा के दौरान के लाखों लोगों की जान को खतरा हो सकता था। 2. खामेनई का अंतिम संस्कार या फिर शक्ति प्रदर्शन? से 9 जुलाई तक चलने वाला अंतिम संस्कार सिर्फ एक शोक सभा नहीं, बल्कि ईरान का एक शक्ति प्रदर्शन भी है। इसमें करीब 2 करोड़ लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। इसमें 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि पहुंचे हैं। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, एक्सपर्ट का कहना है कि सड़कों पर 'लाखों-करोड़ों' लोगों की भीड़ जुटाकर ईरान दुनिया को संदेश दे रहा है कि उसकी शासन व्यवस्था और 'इस्लामिक क्रांति' आज भी पूरी तरह मजबूत है। 3. संस्कार के लिए मुहर्रम का महीना क्यों चुना गया:-शिया इस्लाम में यह महीना शोक, धोखे और शहादत से गहराई से जुड़ा है। 7वीं सदी में इमाम हुसैन की शहादत इसी महीने में हुई थी, जो शिया धर्म में बेहद अहम दर्जा रखते हैं। खामेनेई का वंश उनसे जुड़ा माना जाता है। ईरान की संसद के अध्यक्ष कालीबाफ ने ट्रम्प के उस बयान पर पलटवार किया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि ईरान को खाने-पीने की चीजों के लिए अमेरिका की जरूरत पड़ेगी। ट्रम्प ने गुरुवार को सीएनबीसी को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'उन्हें खाने की जरूरत है। उन्हें मक्का, गेहूं और सोयाबीन चाहिए और यह सब हमारे अमेरिकी किसान उपलब्ध कराएंगे।' इस पर कालीबाफ ने सोशल मीडिया पर जवाब देते हुए लिखा, 'सोचिए, जिस देश के 4 करोड़ से ज्यादा नागरिक फूड स्टैम्प पर निर्भर हों, वह दूसरे देश को भूखा बता रहा है।' तेहरान में खामेनेई के अंतिम दर्शन के लिए शनिवार सुबह ग्रैंड मोसल्ला परिसर खुलने से पहले ही सैकड़ों लोग बाहर कतार में खड़े हो गए। ग्रैंड मोसल्ला में खामेनेई के पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है। कतार में खड़ी सोमय्ये हमेदी ने एएफपी से कहा:-'हम अपने नेता को आखिरी विदाई देना चाहते हैं। इसलिए यहां इंतजार करना हमारे लिए न तो मुश्किल है और न ही तकलीफ देने वाला।' खामेनेई के अंतिम संस्कार में भारत की मौजूदगी:-सरकारी प्रतिनिधिमंडलः भारत सरकार की ओर से विदेश राज्य मंत्री पबित्र मार्गेरिटा और बिहार के राज्यपाल सैयद अता हसनैन आधिकारिक रूप से इस समारोह में शामिल हो रहे हैं। राजनीतिक नेताः जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती, वरिष्ठ कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद और कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा तेहरान पहुंच चुके हैं और उन्होंने खामेनेई को श्रद्धांजलि दी है। धार्मिक नेताः जम्मू-कश्मीर अंजुमन-ए-शरिया शियान के अध्यक्ष आगा सैयद हसन मोसवी अल सफवी सहित भारत के विभिन्न धर्मों (हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई) के प्रमुख धार्मिक प्रतिनिधि भी श्रद्धांजलि देने पहुंचे हैं। खामेनेई के अंतिम संस्कार में तालिबान विरोधी नेता भी पहुंचे, विवाद शुरू खामेनेई के अंतिम संस्कार में तालिबान सरकार के टॉप लीडर्स और तालिबान विरोधी नेता दोनों पहुंचे। इतिहास में यह पहली बार है जब दोनों पक्ष किसी आधिकारिक मंच पर एक साथ पहुंचे थे। तालिबान नेताः इसमें तालिबान की ओर से डिप्टी प्राइम मिनिस्टर मुल्ला अब्दुल गनी बरादर और कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी तेहरान पहुंचे। तालिबान विरोधी नेताः नेशनल रेजिस्टेंस फ्रंट (एनआरएफ) के चीफ अहमद मसूद और इस्लामिक यूनिटी पार्टी के नेता मोहम्मद मोहाकिक शामिल हुए।एनआरएफ अफगानिस्तान विरोधी संगठन है। इसकी स्थापना अगस्त 2021 में तालिबान के काबुल पर कब्जे के बाद हुई थी। यह तालिबान नेताओं पर कई बार हमले कर चुका है। जैसे ही अहमद मसूद और अन्य तालिबान विरोधी नेताओं की तस्वीरें सामने आईं, सोशल मीडिया तालिबान समर्थक सक्रिय हो गए। उन्होंने ईरान पर दोहरी नीति अपनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि एक तरफ ईरान तालिबान के साथ आधिकारिक कूटनीतिक और आर्थिक संबंध बढ़ा रहा है, और दूसरी तरफ वह उन ताकतों को भी तरजीह दे रहा है जो अफगानिस्तान में तालिबान शासन को उखाड़ फेंकना चाहती हैं।

किशोरियों के लिए आत्मरक्षा का प्रशिक्षण कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को जिला प्रोबेशन अधिकारी महोदय के दिशा निर्देशन में किशोरियों के लिए आत्मरक्षा का प्रशिक्षण कार्यक्रम दीपिका सिंह द्वारा आत्मरक्षा के संबंध में जानकारी दी एवं ब्लॉक को ऑर्डिनेटर विजय कुमार पटेल द्वारा केस स्टडी के माध्यम से आत्मरक्षा करना सीखाया व

जनपद सोनभद्र के चोपन ब्लॉक के कुरछा ग्राम में विभाग संबंधी समस्त योजना की जानकारी एवम् आत्म रक्षा से संबंधित जानकारी प्रदान की गई ।उक्त कार्यक्रम में वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रशासक कार्यक्रम में प्रधान नंदलाल, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता चिंता देवी, पंचायत सखी ,आशा एवं हंस सखी इत्यादि शामिल रही। कार्यक्रम में लगभग 70 किशोरियों वा महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

प्रभारी मंत्री हंसराज विश्वकर्मा 2 जुलाई को सोनभद्र दौरे पर रहेंगे, कार्यकर्ता सम्मेलन व जनसंवाद सहित कई कार्यक्रमों में करेंगे प्रतिभाग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को उत्तर प्रदेश सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के राज्य मंत्री एवं जनपद सोनभद्र के प्रभारी मंत्री श्री हंसराज विश्वकर्मा 02 जुलाई (गुरुवार) को जनपद के भ्रमण पर रहेंगे। अपने दौरे के दौरान वह कार्यकर्ता सम्मेलन, विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक, शोक संतप्त परिवार से मुलाकात तथा जनसंवाद कार्यक्रम में भाग लेंगे।निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रभारी मंत्री प्रातः 11:15 बजे वाराणसी सर्किट हाउस से प्रस्थान कर दोपहर 1:00 बजे राबर्ट्सगंज स्थित डीआर ड्रीम्स होटल पहुंचेंगे, जहां आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में प्रतिभाग करेंगे। इसके उपरांत अपराह्न 2:40 बजे सर्किट हाउस, लोढ़ी पहुंचकर विभागीय अधिकारियों से मुलाकात एवं समीक्षा करेंगे।

इसके बाद अपराह्न 3:40 बजे ग्राम मीतापुर, चोपन पहुंचकर नदी में डूबने से हुई दुखद दुर्घटना के शोक संतप्त परिवारजनों से मुलाकात कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करेंगे। तत्पश्चात सायं 4:50 बजे राबर्ट्सगंज नगर के वार्ड संख्या-24, कम्हारी स्थित श्री विजय विश्वकर्मा के आवास पर आयोजित स्थानीय कार्यक्रम एवं जनसंवाद में सहभागिता करेंगे। कार्यक्रम संपन्न होने के उपरांत सायं 5:20 बजे प्रस्थान करेंगे।

सोनभद्र में 26 हजार से अधिक बेटियों का संवरा भविष्य,'कन्या सुमंगला योजना' से मिल रही 25 हजार की आर्थिक उड़ान

डीबीटी के माध्यम से सीधे बैंक खातों में पहुंच रही राशि,बाल विवाह पर लगी रोक और लिंगानुपात में आया सुधार,जन्म से लेकर स्नातक तक छह चरणों में मिल रही मदद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिले में बालिकाओं के सशक्तिकरण और उनके उज्ज्वल चालू वित्त वर्ष में भी योजना के प्रति लोगों का उत्साह देखने को मिल रहा है। अभी 1117 आवेदनों को स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। जिलाधिकारी बताया कि प्रदेश सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना बेटियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा तक आर्थिक संबल प्रदान कर उनके भविष्य को संवारने में कक्षा नौ में दाखिले पर 5,000 रुपये मिलते हैं। अंतिम और षष्टम् श्रेणी में 10वीं या 12वीं उत्तीर्ण करके स्नातक अथवा दो वर्षीय या अधिक अवधि के डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश लेने पर बालिका को 7,000 रुपये की एकमुश्त सहायता राशि प्रदान की जाती है। विभाग के आंकड़ों के अनुसार, योजना के

भविष्य की नींव रखने के उद्देश्य से योगी सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना लगातार सफलता के नए आयाम गढ़ रही है। इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत जनपद सोनभद्र में अब तक 26 हजार से अधिक बालिकाएं लाभान्वित हो चुकी हैं। बेटियों को जन्म से लेकर उच्च शिक्षा तक 25,000 रुपये की कुल आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली यह योजना बाल विवाह रोकने और लिंगानुपात में सुधार लाने में भी बेहद कारगर साबित हो रही है। योजना में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए डीबीटी के माध्यम से लाभ की राशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजी जा रही है। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने बताया कि इस योजना के तहत जिले में अभी तक कुल 26,341 बालिकाओं को लाभान्वित किया जा चुका है। का काम कर रही है। योजना का उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगाना, बालिकाओं के जन्म को प्रोत्साहित करना, उनकी शिक्षा सुनिश्चित करना तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों का सहयोग करना है। छह चरणों में ऐसे मिलता है लाभः-मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजनान्तर्गत बेटियों को जन्म से लेकर स्नातक या डिप्लोमा में प्रवेश तक आयु-आधारित छह चरणों में कुल 25,000 रुपये की सहायता दी जाती है। प्रथम श्रेणी में बालिका के जन्म पर (एक वर्ष के भीतर) 5,000 रुपये मिलते हैं। इसके बाद द्वितीय श्रेणी में एक वर्ष तक के पूर्ण टीकाकरण के बाद 2,000 रुपये प्रदान किए जाते हैं। तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के तहत क्रमशः कक्षा एक और कक्षा छह में प्रवेश पर 3,000-3,000 रुपये की राशि दी जाती है। पंचम श्रेणी तहत सबसे ज्यादा लाभ बालिका के जन्म एवं टीकाकरण के स्तर पर दिया गया है। लाभ लेने के लिए यह है पात्रताः-इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए शासन द्वारा कुछ स्पष्ट नियम तय किए गए हैं। लाभार्थी परिवार की वार्षिक आय 3,00,000 (तीन लाख) रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।

साथ ही, परिवार में अधिकतम दो ही बच्चे होने चाहिए। योजना का लाभ एक परिवार की अधिकतम दो बालिकाओं को ही दिया जा सकता है। हालांकि, विशेष परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए यह प्रावधान भी किया गया है कि यदि किसी परिवार में पहले प्रसव में एक बेटी है, और दूसरे प्रसव में जुड़वां बेटियां हो जाती हैं, तो ऐसी स्थिति में तीनों बेटियों को योजना का पूरा लाभ मिलेगा।

जिलाधिकारी ने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधयों के साथ की बैठक

1200 मतदाताओं के मानक पर होगा मतदेय स्थलों का सम्भाजन, 3 जुलाई तक पूरी होगी संशोधन प्रक्रिया,निजी एवं अनुपयुक्त भवनों से हटेंगे मतदान केन्द्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदेय स्थलों के सम्भाजन केंद्रों में संशोधन एवं स्थान परिवर्तन की कार्रवाई की जाएगी। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि किसी भी मतदान केंद्र को दुकान, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, निजी सामुदायिक भवन, विवाह घर अथवा किसी राजनीतिक व्यक्ति के स्वामित्व वाले भवन में संचालित नहीं किया जाएगा। ऐसे केंद्रों को उपयुक्त शासकीय अथवा सार्वजनिक भवनों में स्थानांतरित दूरी, कम मतदाता संख्या वाले केंद्रों तथा अन्य विषयों पर अपने सुझाव रखे। जिलाधिकारी ने सभी सुझावों पर नियमानुसार परीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया। बैठक के अंत में जिलाधिकारी ने सभी उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि भौतिक सत्यापन रिपोर्ट एवं राजस्व टीम की जांच के आधार पर आवश्यक संशोधन करते हुए

(रैशनलाइजेशन-2026) के संबंध में बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ की अध्यक्षता में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों से सभी दलों को अवगत कराया गया तथा प्रस्तावित मतदेय स्थलों पर सुझाव एवं आपत्तियां आमंत्रित की गईं। जिलाधिकारी ने बताया कि मतदेय स्थलों का सम्भाजन अधिकतम 1200 मतदाताओं के मानक के अनुरूप किया जा रहा है। इसके लिए सभी विधानसभा क्षेत्रों में मतदान केंद्रों का भौतिक सत्यापन कराया गया है। प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर जर्जर भवनों, अनुपयुक्त स्थानों तथा आवश्यकतानुसार मतदान किया जाएगा। यदि कोई मतदान केंद्र निजी भवन में संचालित है और निकट में शासकीय भवन उपलब्ध है तो उसे भी स्थानांतरित किया जाएगा। जिलाधिकारी ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से कहा कि यदि किसी मतदान केंद्र के संबंध में कोई सुझाव, संशोधन या आपत्ति हो तो उसे दो दिवस के भीतर लिखित रूप में जिला निर्वाचन कार्यालय में उपलब्ध कराएं, ताकि जांच कर नियमानुसार कार्रवाई की जा सके। बैठक में यह भी बताया गया कि मतदान केंद्रों के नामों का मानकीकरण किया जाएगा तथा अभिलेखों में अंकित नाम ही स्थल पर प्रदर्शित किए जाएंगे। बैठक के दौरान विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने मतदान केंद्रों की 03 जुलाई, 2026 तक अंतिम रिपोर्ट जिला निर्वाचन कार्यालय को उपलब्ध कराएं, जिससे मतदेय स्थलों के आलेख प्रकाशन की प्रक्रिया समयबद्ध ढंग से पूरी की जा सके। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 श्री वागीश कुमार शुक्ला, श्री रामनिहोर यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी, श्री संतोष कुमार शुक्ला जिला महामंत्री भाजपा, श्री नन्दलाल आर्य जिला मंत्री सीपीआई एम, डा0 ओम प्रकाश मौर्य प्रभारी बसपा, श्री अमर कुमार मौर्य जिला महासचिव बसपा, श्री रमेश गौतम जिलाध्यक्ष आम आदमी पार्टी, श्री अनवर अली अंसारी सूचना प्रभारी आम आदमी पार्टी, श्री जगरूप सिंह पटेल सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी सहित सम्बन्धितगण उपस्थित रहे।

1 से 15 जुलाई तक चलेगा 'मिशन सेफ फ्यूचर', बिना फिटनेस-परमिट वाले स्कूली वाहनों पर होगी सख्त कार्रवाई

पहले चेतावनी, फिर चालान व सीज, नियम तोड़ने वाले स्कूलों की मान्यता पर भी लटक सकती है तलवार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिले में स्कूली बच्चों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित वाहनों के परमिट की अवधि समाप्त हो चुकी है। अभियान का मुख्य उद्देश्य ऐसे सभी वाहनों को जांच अभियान चलाया जाएगा। बिना फिटनेस, बिना परमिट या सुरक्षा मानकों की अनदेखी करते

एआरटीओ कौशल कुमार सिंह

करने के उद्देश्य से परिवहन विभाग 1 से 15 जुलाई तक विशेष अभियान 'मिशन सेफ फ्यूचर' चलाएगा। अभियान के दौरान स्कूल बसों और बच्चों को लाने-ले जाने वाले निजी वाहनों की सघन जांच की जाएगी। बिना फिटनेस, बिना परमिट अथवा सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के खिलाफ चालान, सीज समेत कड़ी कार्रवाई की जाएगी। परिवहन विभाग द्वारा सभी एआरटीओ को अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित करने के निर्देश जारी किए गए हैं। सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी (एआरटीओ) कौशल कुमार सिंह ने बताया कि इंटीग्रेटेड स्कूल व्हीकल मैनेजमेंट पोर्टल के अनुसार जिले में कुल 427 स्कूल वाहन पंजीकृत हैं। इनमें 23 वाहनों की फिटनेस तथा 41 निर्धारित मानकों के अनुरूप लाना और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। अभियान के पहले चरण में 1 से 7 जुलाई तक स्कूल प्रबंधकों और प्रधानाचार्यों को नोटिस, फोन कॉल एवं व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से चेतावनी दी जाएगी। इस दौरान सभी स्कूल वाहनों की फिटनेस और परमिट तत्काल पूर्ण कराने के निर्देश दिए जाएंगे। साथ ही परिवहन विभाग के अधिकारी विद्यालयों में पहुंचकर वाहनों का भौतिक निरीक्षण करेंगे। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला विद्यालय यान सुरक्षा समिति की बैठक भी आयोजित कर सुरक्षा व्यवस्थाओं की समीक्षा की जाएगी। इसके बाद 8 से 15 जुलाई तक परिवहन, पुलिस, यातायात और शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में जिलेभर में व्यापक पाए गए स्कूल वाहनों तथा बच्चों को ढोने वाले निजी वाहनों के खिलाफ चालान और सीज की कार्रवाई की जाएगी।एआरटीओ ने स्पष्ट किया है कि बार-बार चेतावनी के बावजूद नियमों का पालन नहीं करने वाले स्कूलों की सूची जिलाधिकारी के माध्यम से शिक्षा विभाग को भेजी जाएगी, ताकि संबंधित विद्यालयों की मान्यता निरस्त करने की कार्रवाई भी की जा सके। एआरटीओ ने सभी स्कूल संचालकों से अपील की है कि अभियान शुरू होने से पहले अपने वाहनों की फिटनेस,परमिट एवं अन्य आवश्यक दस्तावेज अद्यतन करा लें और सभी सुरक्षा मानकों का पूर्ण पालन सुनिश्चित करें, ताकि स्कूली बच्चों की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित हो सके।

आदिवासी अनादर नहीं आस्था के विषय हैं-संदीप मिश्रा

'पेड़ों की कटान पर बवाल, मुख्यमंत्री को भेजा गया ज्ञापन; वन विभाग के अधिकारियों पर गंभीर आरोप, कंपनी स्थापना के खिलाफ ग्रामीणों ने खोला मोर्चा'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिले में प्रस्तावित औद्योगिक परियोजनाओं और परियोजनाओं के लिए वन क्षेत्र और हरित संपदा को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री से लगने देंगे। जंगल हमारी विरासत है और इसकी रक्षा हर हाल में करेंगे।'रामसेवक ने कहा कि

पर्यावरण संरक्षण को लेकर विरोध तेज होता जा रहा है। किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्रा ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम विस्तृत ज्ञापन भेजकर वन विभाग के अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि शासन के निर्देशों और वन संरक्षण नियमों की अनदेखी करते हुए बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटान के लिए एनोसी दी जा रही है, जिससे पर्यावरण और आदिवासी समुदाय के अधिकारों पर खतरा मंडरा रहा है। मोर्चा ने वर्ष 2024 के शासनादेश का हवाला देते हुए कहा कि पेड़ों की कटान के लिए तय नियमों का पालन नहीं किया जा रहा है। आरोप है कि संरक्षित पेड़ों को भी काटा जा रहा है और संबंधित अधिकारी प्रभावी कार्रवाई करने के बजाय कथित रूप से लापरवाही बरत रहे हैं। संदीप मिश्रा का कहना है कि प्रस्तावित औद्योगिक पूरे मामले की उच्चस्तरीय एवं निष्पक्ष जांच कर दोषी अधिकारियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने तथा अवैध कटान पर तत्काल रोक लगाने की मांग की है। इधर, ग्रामीणों ने भी कंपनी स्थापना के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोल दिया है। कन्हैया चेरो ने कहा कि 'किसी भी कीमत पर कंपनी नहीं लगने दी जाएगी। जरूरत पड़ी तो जिला मुख्यालय से लेकर लखनऊ और दिल्ली तक बड़ा आंदोलन किया जाएगा। चाहे इसके लिए जान ही क्यों न चली जाए।' बिंदु अगरिया ने आरोप लगाया कि 'कंपनी आने से केवल प्रदूषण फैलेगा और गरीबों के जंगल, जमीन और प्राकृतिक अधिकार छिन जाएंगे। इसे किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जाएगा, चाहे जान की बाजी ही क्यों न लगानी पड़े।' राम बहाल ने कहा कि 'हमारे पूर्वजों से जुड़े जंगल और पेड़ हमारी पहचान हैं। जान चली जाएगी, लेकिन कंपनी नहीं 'कोरोना काल में इस क्षेत्र की स्वच्छ हवा और वनस्पतियों ने लोगों को राहत दी थी। आने वाले समय में शहरों के लोग ऐसी हरियाली के लिए तरसेंगे। इसलिए यहां कंपनी स्थापित नहीं होने दी जाएगी।

' किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा ने चेतावनी दी है कि यदि सरकार और प्रशासन ने समय रहते कार्रवाई नहीं की तो पर्यावरण संरक्षण, जंगल बचाने और आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए व्यापक जनआंदोलन शुरू किया जाएगा। संगठन का दावा है कि यह आंदोलन गांव से लेकर जिला मुख्यालय, लखनऊ और दिल्ली तक चलाया जाएगा। आज के कार्यक्रम में विन्दू खरवार गोपीनाथ चेरो मुखलाल चेरो गुलाब चेरो बासमती गोण दीपक गोण दिनेश माझि गुलाब बैगा राजेस पनिका व हजारों आदिवासी महिला पुरुष उपस्थित रहे।

1 जुलाई से 15 अगस्त तक चलेगा रोवर द्वारा पैमाइश अभियान,आधुनिक तकनीक से होगी सटीक पैमाइश

जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अभियान का लाभ उठाने की अपील

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश सरकार की ऐतिहासिक पहल के अंतर्गत धारा- सकेगा। आधुनिक राजस्व अभिलेखों के अनुरूप होने वाली इस पैमाइश से सीमा विवाद,

24 के तहत 1 जुलाई 2026 से 15 अगस्त 2026 तक जनपद की सभी तहसीलों में रोवर (जीएनएसएस) तकनीक के माध्यम से भूमि पैमाइश अभियान संचालित किया जाएगा। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने बताया कि प्रत्येक तहसील में रोवर उपलब्ध रहेगा, जिससे भूमि की वास्तविक स्थिति का कम समय में सटीक निर्धारण किया जा अनावश्यक मुकदमेबाजी एवं पैमाइश संबंधी त्रुटियों में कमी आएगी। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अपील की है कि जिनकी भूमि पैमाइश लंबित है, वे अभियान का अधिकतम लाभ उठाते हुए संबंधित तहसील से संपर्क कर रोवर के माध्यम से पैमाइश कराएं, जिससे सही रिकॉर्ड और सही अधिकार सुनिश्चित हो सके।

आधुनिक समाचार
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
RNI NO:-UPHIN/2015/63398
प्रयागराज से प्रकाशित
अंकपत्र, LIC बांड, रजिस्ट्री पेपर, आईकार्ड खो गया, गुमशुदा, नाम, पता, जन्मतिथि परिवर्तन, अन्य कामर्शियल विज्ञापन उचित दर पर छपवाने के लिए सम्पर्क करें। +91 79914 85344

सबको खुश रखता हूं, सबकी 'हां में हां' मिलाता हूं, लगता है मेरी अपनी कोई पर्सनैलिटी ही नहीं

नयी दिल्ली। उम्र के अलग-अलग पड़ाव पर विचार बदलते रहते हैं, ऐसा होना सामान्य बात हो सकती हैं. इस विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 27 साल का हूं और पिछले कुछ समय से एक अजीब बात नोटिस कर रहा हूं। मैं जब अपने परिवार के साथ होता हूं तो एक तरह से व्यवहार करता हूं, दोस्तों के साथ दूसरी तरह से और ऑफिस में एकदम अलग ही इंसान बन जाता हूं। कई बार लगता है कि मैं हर जगह लोगों की अपेक्षाओं के हिसाब से खुद को बदल लेता हूं। प्रॉब्लम ये है कि मुझे समझ नहीं आता कि इनमें से असली मैं कौन हूं। मैं किस तरह का इंसान हूं, मेरी अपनी पसंद-नापसंद क्या है। मैं खुद को नहीं जानता। इसलिए भीतर एक अजीब-सा खालीपन महसूस होता है। क्या यह पहचान से जुड़ा संकट है? मैं खुद को कैसे जानूं? मैं क्या करूं? सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। 'लोग क्या सोचेंगे?' ये सवाल कुछ लोगों के जीवन और फैसलों को तय करने वाला सबसे बड़ा पैमाना है। ऐसे लोग हर माहौल में खुद को इस तरह ढाल लेते हैं कि सामने वाले को वे बिल्कुल अपने जैसे लगें। दोस्तों के बीच अलग व्यक्तित्व, ऑफिस में अलग, परिवार में अलग और पार्टनर के साथ अलग। ऊपर से वे मिलनसार, आत्मविश्वासी और हर परिस्थिति में एडजस्ट करने वाले नजर आते हैं, लेकिन अंदर-ही-अंदर वे खुद से कहते हैं–'मुझे समझ ही नहीं आता कि असल में मैं हूं कौन।' दूसरों के साथ तालमेल बिठाना अच्छी बात हैं। लेकिन अगर हर रिश्ते में अपनी पहचान और अपने विचार बदलने पड़ें तो यह मानसिक रूप से थका सकता है। स्वस्थ रिश्ते वही हैं, जहां व्यक्ति अपनी असहमति भी सम्मानपूर्वक रख सके। क्या है 'कैमेलियन पर्सनैलिटी'? मनोविज्ञान में इसे 'कैमेलियन पर्सनैलिटी' कहते हैं। यानी ऐसा व्यक्ति, जो हर परिस्थिति और हर व्यक्ति के मुताबिक खुद को बदल लेता है। हालांकि यह कोई मानसिक बीमारी या मनोवैज्ञानिक डायग्नोसिस नहीं है। हर इंसान अलग-अलग परिस्थितियों में अपना व्यवहार बदलता है। हम बॉस से जिस तरह बात करते हैं, उसी तरह अपने दोस्त या परिवार से नहीं करते। यह सामाजिक लचीलापन सामान्य है और जरूरी भी। समस्या तब शुरू होती है, जब एडजेस्टमेंट करते-करते व्यक्ति अपनी असली पहचान, पसंद, सीमाएं और मूल्य ही खोने लगता है। क्या है 'कैमेलियन पर्सनैलिटी'? हरेक के सामने अलग व्यक्तित्व दिखाना। दूसरों को खुश करने के लिए खुद को बदलना। असहमति जताने से डरना। अपनी पसंद-नापसंद दबा लेना। स्वीकृति के लिए अपनी पहचान खोना। कैमेलियन पर्सनैलिटी कब समस्या? कैमेलियन पर्सनैलिटी वाले लोग बाहर से आत्मविश्वासी, मिलनसार और सहयोगी दिखाई देते हैं, लेकिन उनके भीतर काफी कॉन्फ्लिक्ट चलते रहते हैं। वे अक्सर– सामने सहमति जताते हैं, जबकि अंदर से असहमत होते हैं। दूसरों की पसंद को अपनी पसंद बताने लगते हैं। हर ग्रुप के हिसाब से अपने विचार बदल लेते हैं। अपनी इच्छा बताने से बचते हैं। हर अनुरोध पर 'हां' कह देते हैं और बाद में पछताते हैं।पसंदीदा व्यक्ति की लाइफस्टाइल या व्यक्तित्व की नकल करते हैं। अपनी सीमाएं टूटने पर भी चुप रहते हैं। अकेले होने पर समझ नहीं पाते कि वास्तव में उन्हें क्या पसंद है। मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि इस तरह के व्यवहार के पीछे ये संभावित कारण हो सकते हैं- अप्रूवल सीकिंग (हर समय स्वीकृति पाने की चाह) सोशल एंग्जाइटी (सामाजिक चिंता) लो सेल्फ इस्टीम (कम आत्मसम्मान) कंफॉर्मिटी (भीड़ के अनुसार चलने, उनकी बात मानने की प्रवृत्ति) सेल्फ कंसेप्ट (अपनी पहचान को लेकर भ्रम) ये संकेत दिखें तो सावधान हो जाएंः-सामने हां बोलना, पीछे असहमत होना। दूसरों की पसंद को अपनी पसंद बताना। समूह के अनुसार अपने विचार बदलना। अपनी राय देने से बचना। पहले 'हां' कहना, फिर पछताना।

किसी की लाइफस्टाइल कॉपी करना। लोग बाउंड्री लांघे तो भी चुप रहना। अपनी इच्छा जरूरत समझ न पाना। हर फैसले पर दूसरों की मंजूरी लेना। लोगों के नाराज होने से डरना। क्यों

बनती है 'कैमेलियन पर्सनैलिटी'? ज्यादातर मामलों में यह व्यवहार बचपन के या जीवन के पुराने अनुभवों से सीखा हुआ होता है। अगर बचपन में व्यक्ति ने यह महसूस किया हो कि–केवल आज्ञाकारी होने पर प्यार मिलेगा। गलती करने पर आलोचना होगी। अपनी बात रखने पर डांट पड़ेगी। परिवार में विरोध करना सुरक्षित नहीं है।स्कूल में बुलीइंग या रिजेक्शन झेलना पड़ा हो। कंट्रोल करने वाले रिश्तों में रहना पड़ा हो। तो धीरे-धीरे उसके मन में यह विश्वास बैठ सकता है कि– 'अगर मैं दूसरों जैसा नहीं बनूंगा, तो लोग मुझे स्वीकार नहीं करेंगे।' यह मानसिक चक्र कैसे चलता है? स्थिति- कोई व्यक्ति अपनी मजबूत राय या अपेक्षा सामने रखना चाहता है। मन में आया विचार- 'अगर मैंने ऐसा किया, अगर असहमति जताई तो सामने वाला मुझे पसंद नहीं करेगा।' भावना- डर, चिंता, अपराधबोध या शर्म। व्यवहार- तुरंत सहमति जताना, माफी मांगना या चुप रह जाना। तत्काल नतीजा- तनाव कम होता है और विवाद टल जाता है। लंबे समय में इसका असरः-अगर कोई व्यक्ति हमेशा ही दूसरों से सहमति जता रहा है और अपनी असली भावनाएं नहीं बता रहा है तो लंबे समय में इसका नेगेटिव प्रभाव दिख सकता है। जैसेकि- मन में नाराजगी, मानसिक थकान, कमजोर सेल्फ बाउंड्री, आत्मविश्वास में कमी,

अपनी पहचान खोने का एहसास, लोगों से सहमत होना हमेशा समस्या नहीं है। समस्या तब होती है, जब असहमति जताने का विचार ही आपको असुरक्षित महसूस कराने लगे। थेरेपी का उद्देश्य व्यक्ति को झगड़ालू बनाना नहीं, बल्कि उसे अपनी बात सम्मानपूर्वक रखने का आत्मविश्वास देना है। 1950 के दशक का मशहूर प्रयोग पोलिश-अमेरिकी सामाजिक मनोवैज्ञानिक सोलोमन ऐश ने 1950 के दशक में एक प्रसिद्ध प्रयोग किया। इस प्रयोग में हिस्सा ले रहे प्रतिभागियों को तीन रेखाएं दिखाई गईं। एक सीधी रेखा और तीन अन्य रेखाएं। उन्हें बताना था कि कौन-सी रेखा पहली वाली के बराबर लंबी है। इस सवाल का जवाब बेहद आसान था। लेकिन प्रयोग में शामिल अधिकांश लोग असल में रिसर्च टीम का ही हिस्सा थे। उन लोगों ने जानबूझकर गलत उत्तर देना शुरू किया। अब असली प्रतिभागी के सामने दो विकल्प थे–या तो वो अपनी आंखों पर भरोसा करे। या वो भीड़ की बात मान ले। इस प्रयोग का नतीजा चौंकाने वाला था। लगभग 75फीसदी लोगों ने कम-से-कम एक बार भीड़ का गलत जवाब स्वीकार कर लिया। कई लोग जानते थे कि जवाब गलत है, लेकिन वे अलग नहीं दिखना चाहते थे। कुछ लोगों को तो अपनी ही समझ पर शक होने लगा। भीड़ का दबाव कैसे काम करता है? 1. स्वीकृति की चाहः-अलग नहीं दिखना चाहते। डरते हैं- 'लोग क्या कहेंगे।' इसलिए 'हां में हां' मिलाते हैं। 2. खुद पर शकः-खुद पर डाउट करते हैं। अपनी समझ पर यकीन नहीं। दूसरों के पर यकीन है। एक व्यक्ति भी ला सकता है फर्क सोलोमन ऐश के प्रयोग में एक और दिलचस्प बात सामने आई। वो ये कि सिर्फ एक व्यक्ति भी फर्क ला सकता है। उन्होंने इस प्रयोग के दौरान देखा कि अगर भीड़ में सिर्फ एक व्यक्ति भी अलग राय रखता था तो बाकी लोगों के लिए भी स्वतंत्र होकर जवाब देना आसान हो जाता था। यानी अगर सिर्फ एक भरोसेमंद दोस्त, परिवार का सदस्य, काउंसलर या थेरेपिस्ट यह कहे कि– 'तुम्हें अलग सोचने का भी अधिकार है।' –तो व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी सोच पर दोबारा भरोसा करना सीख सकता है। भारतीय परिवारों के संदर्भ में इसे कैसे समझें? भारतीय समाज में ये सब महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य माने जाते हैं- बड़ों का सम्मान परिवार को प्राथमिकता दूसरों के लिए समझौता सामूहिक फैसला इसलिए हर जगह और हरेक स्थिति में दूसरे की बात मान लेना, उसके अनुसार चलना मानसिक समस्या नहीं है। असली सवाल ये है कि- क्या आप अपनी इच्छा से दूसरों की बात मानते हैं, या मना करने से डरते हैं? क्या जरूरत पड़ने पर आप सम्मानपूर्वक 'नहीं' कह सकते हैं? क्या आप अपनी गरिमा और सीमा बचाते हुए रिश्ते निभा सकते हैं? यदि इसका जवाब 'नहीं' है, तो इस पैटर्न पर ध्यान देने की जरूरत है। क्या आप 'कैमेलियन पर्सनैलिटी' हैं? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में कुल 12 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हमेशा' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। स्कोर का इंटरप्रिटेशन भी ग्राफिक में दिया है। 'कैमेलियन पर्सनैलिटी' को कैसे बदलें? चार हफ्तों का सेल्फ हेल्प प्लान यहां मैं आपको चार हफ्तों का एक सेल्फ हेल्प प्लान दे रहा हूं। स्टेप-बाय-स्टेप इस प्लान को फॉलो करें और प्रोग्रेस को रोज अपनी डायरी में नोट करें। सप्ताह 1 ः अपनी आदत पहचानें हर दिन किसी एक घटना के बारे में लिखें–वहां क्या हुआ? मेरी असली राय क्या थी? लेकिन मैंने क्या कहा? मुझे किस बात का डर था? क्या मुझे तुरंत राहत महसूस हुई? बाद में इसका क्या नुकसान हुआ?साथ ही डायरी में अपने जीवन के पांच सबसे महत्वपूर्ण मूल्य लिखें, जैसे– ईमानदारी परिवार स्वतंत्रता सीखना करुणा रचनात्मकता आप अपने हिसाब से कुछ भी लिख सकते हैं। फिर अपने लिए जरूरी हरेक मूल्य के लिए एक छोटा कदम तय करें। जैसेकि आप खुद से कह सकते हैं- अगर 'ईमानदारी' महत्वपूर्ण है, तो मैं रोज कम-से-कम एक बार ईमानदारी से अपने मन की बात जरूर कहूंगा। दूसरा सप्ताहः अपने डर को चुनौती दें-जब भी लगे कि सामने वाला नाराज हो जाएगा तो खुद से पूछें–क्या मेरे डर का कोई ठोस सबूत है? क्या इसका उल्टा भी संभव है? क्या मैं बिना वजह सबसे बुरा सोच रहा हूं? अगर किसी और ने राय न दी होती तो मैं क्या सोचता? क्या मैं सचमुच सहमत हूं या सिर्फ डर रहा हूं? फिर छोटी-छोटी शुरुआत करें– अपनी पसंद का खाना चुनें। किसी एक्टिविटी का सुझाव दें। किसी बात पर विनम्र असहमति जताएं। तीसरा सप्ताहः सम्मानपूर्वक 'ना' कहना सीखें ऐसे वाक्य बोलने का अभ्यास करें–'मैं आपकी बात समझता, लेकिन मेरी राय अलग है।' 'धन्यवाद, लेकिन मैं इसमें शामिल नहीं हो पाऊंगा।' 'मैं आपकी बात का सम्मान करता हूं, फिर भी मेरी पसंद अलग है।' चौथा सप्ताहः अपनी पहचान मजबूत करें अपनी डायरी में इन वाक्यों को पूरा करें–मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। मुझे वास्तव में पसंद है। मैं यह बिल्कुल स्वीकार नहीं करूंगा कि। मैं ऐसा इंसान बनना चाहता हूं, जो। किसी भी बड़े फैसले से पहले खुद से ये 4 सवाल पूछें–अगर कोई मुझे देख नहीं रहा होता, तब भी क्या मैं यही फैसला लेता? क्या यह मेरे मूल्यों से मेल खाता है? क्या मैं यह अपनी इच्छा से कर रहा हूं या अस्वीकृति के डर से? अगर असहमति जताना पूरी तरह सुरक्षित होता, तो मैं क्या चुनता? प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? शुरुआती स्तर पर इस पैटर्न को समझकर और कुछ सेल्फ-हेल्प उपाय अपनाकर काफी सुधार किया जा सकता है। लेकिन अगर इसकी वजह से मानसिक स्वास्थ्य, रिश्ते या रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित होने लगे, तो प्रोफेशनल मदद लेने में देर नहीं करनी चाहिए। प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? लगातार डिप्रेशन, हर रिश्ते में एंजाइटी हो। शोषण होने लगे। आत्मसम्मान गिरने लगे। मामूली निर्णय भी न ले पाएं। काम और स्वास्थ्य प्रभावित हो। अंतिम बात-याद रखें, इस पूरी एक्सरसाइज का मकसद आपको जिद्दी, बहस करने वाला या असंवेदनशील बनाना नहीं है। इसका उद्देश्य सिर्फ इतना है कि आप बिना डर के अपनी बात कह सकें। अपनी राय और अपनी असहमति व्यक्त कर सकें।

स्मोकिंग न करें-सिगरेट पीने से जल्दी सफेद होते बाल,ये 7 कारण भी जिम्मेदार, हेल्दी बालों के लिए 8 चीजें खाएं

नयी दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के मुताबिक, दुनिया में हर साल लाखों लोगों के बाल समय से पहले सफेद हो जाते हैं। 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ' के मुताबिक, दुनिया के 25फीसदी से ज्यादा लोगों के बाल समय से पहले सफेद होते हैं। इसे प्रीमैच्योर ग्रेइंग कहते हैं। मेलानिन की मात्रा कम होने पर बाल सफेद दिखने लगते हैं। आमतौर पर यह 40 की उम्र के बाद होता है। लेकिन अगर ये पहले ही हो रहा है तो इसे प्रीमैच्योर ग्रेइंग कहते हैं। इसके लिए जेनेटिक्स, खराब लाइफस्टाइल और न्यूट्रिशन की कमी जैसे कई कारण जिम्मेदार हैं। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में प्रीमैच्योर ग्रेइंग की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- किन वजहों से कम उम्र में बाल सफेद होते हैं? बालों को हेल्दी रखने के लिए खानपान में क्या बदलाव करें? क्या सफेद बाल फिर से काले हो सकते हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. विजय सिंघल, सीनियर कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- प्रीमैच्योर ग्रेइंग क्या है? जवाब- बालों का काला रंग मेलानिन पिगमेंट से बनता है। उम्र बढ़ने के साथ बालों की जड़ें मेलानिन बनाना कम कर देती हैं। इससे बाल सफेद दिखने लगते हैं। अगर यह प्रक्रिया 20-30 साल की उम्र में ही शुरू हो जाए तो इसे प्रीमैच्योर ग्रेइंग कहते हैं। अगर कम उम्र में बाल सफेद हो रहे हैं तो डॉक्टर से कंसल्ट करें। इसके पीछे जेनेटिक्स, न्यूट्रिशन की कमी, स्ट्रेस या कुछ हेल्थ कंडीशंस जैसे कारण हो सकते हैं। संतुलित डाइट और हेल्दी लाइफस्टाइल से इसे कंट्रोल किया जा सकता है।सवाल- किस उम्र में बाल सफेद होना सामान्य है? जवाब- अगर कोई जेनेटिक या हेल्थ प्रॉब्लम न हो तो व्यक्ति के बाल 30-40 की उम्र में सफेद होना शुरू होते हैं। 50 वर्ष की उम्र तक ज्यादातर लोगों के बाल सफेद या ग्रे हो जाते हैं। सवाल- प्रीमैच्योर ग्रेइंग की समस्या क्यों होती है? जवाब- जब स्कैल्प में मौजूद सेल्स पर्याप्त मेलानिन नहीं बना पातीं हैं या बनाना बंद कर देती हैं तो बाल सफेद होने लगते हैं। इसकी कई वजहें हो सकती हैं। स्मोकिंग, जेनेटिक्स, न्यूट्रिएंट्स की कमी, पॉल्यूशन, स्ट्रेस और एंजाइटी, युवी रेज एक्सपोजर, थायरॉइड प्रॉब्लम। सवाल- किन विटामिन्स और मिनरल्स की कमी से बाल सफेद हो सकते हैं? जवाब- कुछ विटामिन्स और मिनरल्स की कमी के कारण समय से पहले बाल सफेद हो सकते हैं। इन न्यूट्रिएंट्स की कमी से सफेद होते बालः- विटामिन बी12, विटामिन डी, फोलेट, जिंक, आयरन, कॉपर। सवाल- स्ट्रेस और एंग्जाइटी के कारण बाल क्यों सफेद होते हैं? जवाब- लंबे समय तक स्ट्रेस और एंग्जाइटी रहने पर शरीर में स्ट्रेस हॉर्मोन बढ़ जाता है। इसके कारण- बालों की जड़ों में मौजूद मेलानिन बनाने वाली सेल्स प्रभावित होती हैं। मेलानिन कम बनने लगता है और बाल सफेद होने लगते हैं।

तनाव से ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस बढ़ता है, जिससे मेलानिन बनाने वाली सेल्स डैमेज हो सकती हैं। सवाल- क्या ज्यादा धूप में रहने से बाल सफेद हो सकते हैं? जवाब- हां, बहुत ज्यादा धूप (युवी रेज) के एक्सपोजर से बालों को नुकसान हो सकता है। युवी रेज ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस बढ़ाती हैं, जिससे मेलानिन को नुकसान हो सकता है। हालांकि, आमतौर पर केवल धूप प्रीमैच्योर ग्रेइंग की मुख्य वजह नहीं होती है। जेनेटिक्स, न्यूट्रिशन की कमी और अन्य हेल्थ प्रॉब्लम्स ज्यादा बड़ी वजह हैं। सवाल- क्या खराब लाइफस्टाइल भी प्रीमैच्योर ग्रेइंग की वजह हो सकती है? जवाब- हां, खराब लाइफस्टाइल प्रीमैच्योर ग्रेइंग का रिस्क बढ़ा सकती है, जैसे- स्मोकिंग, नींद की कमी, अनहेल्दी डाइट, लगातार स्ट्रेस, लो फिजिकल एक्टिविटी, सवाल- क्या किसी बीमारी के कारण भी बाल सफेद हो सकते हैं?जवाब- हां, कुछ बीमारियों के कारण मेलानिन बनाने वाली सेल्स प्रभावित हो सकती हैं, जिससे बाल समय से पहले सफेद हो सकते हैं। जैसेकि- थायरॉइड डिसऑर्डर विटिलिगो (एक ऑटोइम्यून बीमारी, जिसमें त्वचा पर सफेद दाग हो जाते हैं।) अन्य ऑटोइम्यून कंडीशंस रेयर जेनेटिक प्रॉब्लम्स सवाल- बाल काले रखने के लिए डाइट में क्या बदलाव करने चाहिए? जवाब- बाल काले और स्वस्थ रखने के लिए ऐसी चीजें खाएं, जो विटामिन बी12, आयरन, कॉपर, जिंक, फोलिक एसिड और प्रोटीन से भरपूर हों। हेल्दी बालों के 'लिए क्या खाएं? दूध-दही, हरी सब्जियां, दालें, ड्राई फ्रूट्स, बीन्स, फल, अंडे, मछली। सवाल- बाल काले रखने के लिए ओवरऑल लाइफस्टाइल में क्या बदलाव करने चाहिए? जवाब- इसके लिए लाइफस्टाइल में ये जरूरी बदलाव करें- पर्याप्त नींद लें- रोज 7-9 घंटे की नींद शरीर की रिकवरी और सेल्स लिए जरूरी है। स्ट्रेस मैनेज करें- योग, मेडिटेशन और डीप ब्रीदिंग से मदद मिलती है।

रेगुलर एक्सरसाइज करें- ब्लड फ्लो और ओवरऑल हेल्थ बेहतर रहती है। बैलेंस्ड डाइट लें- बालों के लिए विटामिन्स, मिनरल्स और प्रोटीन से भरपूर डाइट जरूरी है।

केमिकल्स और हीट से बचें- बार-बार डाई, ब्लीच या हीट स्टाइलिंग बालों को डैमेज कर सकती है। स्मोकिंग न करें- इससे प्रीमैच्योर ग्रेइंग का रिस्क बढ़ता है। हेल्दी बालों के लिए क्या करें? प्रोटीन रिच डाइट लें, आयरन, जिंक, बायोटिन लें। पर्याप्त पानी पिएं। रोज 7-9 घंटे की नींद लें। तनाव को कंट्रोल करें। रेगुलर एक्सरसाइज करें। स्कैल्प एकदम साफ रखें। हीट, केमिकल्स ट्रीटमेंट से बचें। सिगरेट, तंबाकू से दूर रहें। धूप, धूल, प्रदूषण से बचें। गीले बालों को रगड़ें नहीं।किसी समस्या को इग्नोर न करें। प्रीमैच्योर ग्रेइंग से जुड़े कॉमन सवाल-जवाब-सवाल- क्या सफेद बाल फिर से काले हो सकते हैं? जवाब- आमतौर पर जो बाल पूरी तरह सफेद हो चुके हैं, वे दोबारा काले नहीं होते। अगर इसकी वजह विटामिन्स या मिनरल्स हैं तो ये फिर से काले हो सकते हैं। जैसेकि- विटामिन बी12 की कमी है। आयरन की कमी है। थायरॉइड प्रॉब्लम है। सवाल- क्या सफेद बाल उखाड़ने से ज्यादा सफेद बाल निकल आते हैं? जवाब- नहीं, यह एक मिथ है। एक सफेद बाल उखाड़ने से उसकी जगह कई नए सफेद बाल नहीं निकलते। एक हेयर फॉलिकल (बाल की जड़) से आमतौर पर एक ही बाल उगता है।

हालांकि, बार-बार बाल उखाड़ने से हेयर फॉलिकल डैमेज हो सकते हैं, जिससे बाल पतले हो सकते हैं या उस जगह बाल उगना बंद हो सकता है। सवाल- अगर पेरेंट्स के बाल जल्दी सफेद हुए थे तो क्या बच्चों में भी ऐसा होगा? जवाब- हां, जेनेटिक्स प्रीमैच्योर ग्रेइंग की सबसे महत्वपूर्ण वजह है। यदि पेरेंट्स के बाल कम उम्र में सफेद हुए थे तो बच्चों के भी बाल जल्दी सफेद होने की आशंका बढ़ जाती है। हालांकि, यह जरूरी नहीं है कि ऐसा हर मामले में होगा। डाइट, लाइफस्टाइल, हेल्थ और एनवायर्नमेंटल फैक्टर्स भी भूमिका निभाते हैं।

सवाल- क्या हेयर कलर लगाने से बाल जल्दी सफेद होते हैं? जवाब- ऐसा जरूरी नहीं है, क्योंकि हेयर कलर से मेलानिन प्रोडक्शन प्रभावित नहीं होता है। इसलिए सीधे तौर पर इसके कारण बाल जल्दी सफेद नहीं होते हैं।

हालांकि, बार-बार या गलत तरीके से हेयर कलर, ब्लीच और केमिकल्स के इस्तेमाल से बाल रूखे, कमजोर या डैमेज हो सकते हैं।

सवाल- बाल सफेद होने के साथ किन लक्षणों पर डॉक्टर से कंसल्ट करना चाहिए? जवाब- डॉक्टर से कंसल्ट करें, अगर- कम उम्र में अचानक तेजी से बाल सफेद होने लगें। बाल सफेद होने के साथ बहुत झड़ रहे हों।

प्रीमैच्योर ग्रेइंग के साथ बहुत थकान, कमजोरी लग रही हो। वजन अचानक बढ़ या घट रहा हो। स्किन पर सफेद धब्बे भी दिखाई दें। ठंड या गर्मी असामान्य रूप से ज्यादा लगे। फैमिली में थायरॉइड या ऑटोइम्यून डिजीज की हिस्ट्री हो।

मेरी बेटी को लगता है, वो मोटी है-अपनी तुलना सोशल मीडिया वाली लड़कियों से करती है और दुखी होती है, उसे कैसे समझाऊं?

जयपुर। आज के आधुनिक युग में हमारी पीढ़ी हमसे विपरीत सोशल मीडिया से बहुत जल्दी प्रभावित हो जाती हैं तो ऐसा होना स्वाभाविक हैं विषय को और गहराई से समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माधयम से। सवाल- मैं दिल्ली से हूं। मेरी 14 साल की बेटी है। पिछले कुछ महीनों से मैं नोटिस कर रही हूं कि वह अपने लुक्स और बॉडी को लेकर काफी इनसिक्योर महसूस करने लगी है। कभी वह अपने वजन को लेकर परेशान रहती है, तो कभी अपनी स्किन या हाइट को लेकर। वह अक्सर अपनी तुलना सोशल मीडिया पर दिखने वाली लड़कियों से करती है और कई बार खुद को कमतर महसूस करती है। मुझे उसकी चिंता हो रही है। उसे कैसे समझाऊं कि असली खूबसूरती क्या होती है और उसका आत्मविश्वास कैसे बढ़ाऊं? जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। किशोरावस्था यानी टीनएज वह

समय है, जब बच्चे अपनी बॉडी, लुक्स और दूसरों की राय को लेकर सेंसिटिव होते हैं। प्यूबर्टी की एज यानी 13-18 साल की उम्र में तेजी से शारीरिक और मानसिक बदलाव होते हैं। इस उम्र में सोशल मीडिया ट्रेंड्स और दोस्तों से वैलिडेशन पाने की चाहत बढ़ती है। इसके कारण परफेक्ट दिखने का दबाव बनता है। ऐसे में अपने लुक्स को लेकर इनसिक्योर महसूस करना कॉमन है। हालांकि इसे सिर्फ एक फेज कहकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, क्योंकि लगातार नेगेटिव बॉडी इमेज बच्चे के आत्मविश्वास और मेंटल हेल्थ को प्रभावित कर सकती है। पहले समझिए, बॉडी इमेज क्या होती है? व्यक्ति अपने शरीर, चेहरे, वजन, रंग और लुक्स को लेकर जैसा महसूस करता है, उसे बॉडी इमेज कहते हैं। यह पॉजिटिव भी हो सकती है और नेगेटिव भी। जब कोई खुद को दूसरों से कम सुंदर या कम आकर्षक समझने लगे तो इसे नेगेटिव बॉडी इमेज कहा जाता है। टीनएज में बॉडी इमेज को लेकर चिंता क्यों होती है? इस फेज में शरीर और भावनाओं दोनों में बदलाव आते हैं। इस दौरान बच्चे खुद को दूसरों की नजर से देखने लगते हैं। उन्हें लगता है कि लोग उनके लुक्स को जज कर रहे हैं। सोशल मीडिया ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है। इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स पर बच्चे हर समय ऐसे चेहरे देखते हैं, जो फिल्टर, मेकअप, एडिटिंग और कैमरा एंगल की मदद से 'परफेक्ट' बनाए जाते हैं। बच्चे असल जिंदगी और सोशल मीडिया के बीच फर्क नहीं कर पाते हैं। टीनएज में बॉडी इमेज को लेकर चिंता के पीछे कई अन्य वजहें भी हैं। सोशल मीडिया का बॉडी इमेज पर प्रभाव- टीनएज बॉडी इमेज पर अब तक कई स्टडीज हो चुकी हैं, जो बताती हैं कि सोशल मीडिया और इंटरनेट किशोर लड़कियों के आत्मविश्वास, मेंटल हेल्थ और खुद को देखने के नजरिए को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। साल 2023 में 'अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन' (एपीए) की एक स्टडी के मुताबिक, टीनएज लड़कियां सोशल मीडिया पर जितना ज्यादा समय बिताती हैं, उनमें बॉडी इमेज को लेकर असंतोष उतना ही बढ़ता है। एडिटेड तस्वीरें, ब्यूटी फिल्टर्स और 'परफेक्ट बॉडी' कंटेंट देखने से टीनएजर्स में खुद की तुलना करने की आदत बढ़ती है। इससे एंग्जाइटी, लो सेल्फ-एस्टीम और ईटिंग डिसऑर्डर का रिस्क बढ़ता है। वहीं साल 2021 में 'मेटा' की इंटरनल रिसर्च लीक होने के बाद सामने आया कि इंस्टाग्राम टीनएज लड़कियों की बॉडी इमेज पर नेगेटिव असर डाल रहा है। इस स्टडी में करीब 32फीसदी किशोरियों ने माना कि जब वे अपनी बॉडी को लेकर पहले से परेशान होती थीं, तब इंस्टाग्राम उनकी समस्या और बढ़ा देता था। आइए, अब इस समस्या के समाधान पर बात करते हैं- बेटी की भावनाओं को हल्के में न लें-अक्सर माता-पिता अपनी टीनएज बेटी को समझाने के लिए तुरंत बोल देते हैं- 'तुम बिल्कुल ठीक लगती हो।' 'तुम बेवजह सोच रही हो।' 'इतनी छोटी बात पर परेशान मत हो।' हालांकि ऐसा कहने के पीछे प्यार होता है, लेकिन कई बार बेटी ये सोच सकती है कि उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। इसलिए सबसे पहले उसकी बात सुनिए। अगर वह कहती है कि उसे अपनी स्किन, वजन या हाइट पसंद नहीं है, तो तुरंत समझाने की बजाय पूछें कि-'तुम ऐसा क्यों महसूस कर रही हो?' 'क्या किसी ने कुछ कहा है?' 'क्या सोशल मीडिया देखकर ऐसा लगता है?' जब बच्चे अपनी बात खुलकर कह पाते हैं, तो उन्हें भावनात्मक रूप से सुरक्षा का अहसास होता है। सोशल मीडिया की 'परफेक्ट दुनिया' का सच समझाएं-बेटी को बताएं कि सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी जिंदगी का 'सबसे अच्छा हिस्सा' दिखाता है। कोई अपनी परेशानियां और इनसिक्योरिटीज नहीं दिखाता। बच्चे यह नहीं समझ पाते कि- ज्यादातर तस्वीरें फिल्टर्ड और एडिट की हुई होती हैं। तस्वीरों में कैमरा एंगल, मेकअप और लाइटिंग बहुत फर्क डालते हैं। सोशल मीडिया पर लोग अपनी जिंदगी का सिर्फ 'बेस्ट पार्ट' दिखाते हैं। बेटी से खुलकर इस बारे में बात करें कि- सोशल मीडिया रियल लाइफ नहीं है। हर इंसान अपने आप में खूबसूरत होता है। हर किसी की ग्रोथ अलग स्पीड से होती है। सुंदरता का कोई एक तय पैमाना नहीं होता। व्यक्ति मन से सुंदर होता है। सिर्फ लुक्स की तारीफ न करें-अगर बच्चों को हमेशा सिर्फ 'तुम बहुत सुंदर लग रही हो' जैसे कॉम्प्लिमेंट मिलते हैं, तो वे अपनी पहचान को केवल लुक्स से जोड़ने लगते हैं। बेटी को यह समझाएं कि खूबसूरती सिर्फ चेहरे, रंग या शरीर तक सीमित नहीं होती। असली खूबसूरती में कई चीजें शामिल होती हैं-आत्मविश्वास, व्यवहार, दयालुता, सोच,ईमानदारी, दूसरों के प्रति सम्मान, बच्ची को बताएं कि दुनिया में हर इंसान अलग है और यही उसकी सबसे बड़ी खूबी है। इसके साथ ही आप बेटी की दूसरी खूबियों की तारीफ करें। जैसेकि- उसकी मेहनत, उसका व्यवहार, उसकी समझदारी, उसकी क्रिएटिविटी, उसकी हॉबी, उसकी दयालुता, जब बच्ची समझती है कि उसकी वैल्यू सिर्फ चेहरे या बॉडी से तय नहीं होती, तब उसका आत्मविश्वास मजबूत होता है। घर का माहौल पॉजिटिव रखें-बच्चे सिर्फ बातें नहीं सुनते, वे घर का माहौल भी महसूस करते हैं। अगर घर में बार-बार वजन, रंग, हाइट या लुक्स को लेकर बातें होती हैं, तो इसका असर बच्चों पर पड़ता है। उदाहरण के लिए-'तुम मोटी लग रही हो।' 'थोड़ा गोरा रंग होता तो अच्छा लगता।' 'कितना वजन बढ़ गया है।' ऐसी बातें बच्चे के मन में गहराई तक बैठ सकती हैं। इसलिए कोशिश करें कि घर में- बॉडी शेमिंग बिल्कुल न हो। किसी के रंग या वजन का मजाक न बने। सुंदर होने जैसी सोच को बढ़ावा न मिले। बच्ची का कॉन्फिडेंस बढाने के लिए ग्राफिक में दी गई कुछ और बातों का ध्यान रखें- बेटी के साथ क्वालिटी टाइम बिताएं- कई बार बच्चे इसलिए भी ज्यादा इनसिक्योरिटी महसूस करते हैं, क्योंकि उन्हें इमोशनल सपोर्ट की जरूरत होती है। अपनी बेटी के साथ समय बिताएं। उसके साथ वॉक पर जाइए। उसकी हॉबी बढ़ाव दीजिए। उसकी बातों को ध्यान से सुनिए। साथ खाना बनाइए। जब बच्चे को लगता है कि उसे बिना किसी जजमेंट के स्वीकार किया जा रहा है, तो उसका आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। सोशल मीडिया की तुलना बच्चों के मन में हीन भावना पैदा कर सकती है। अगर घर का माहौल सकारात्मक हो, बॉडी शेमिंग न हो और बच्चे की खूबियों को सराहा जाए, तो वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना सीखते हैं। कब सतर्क होने की जरूरत है? अगर बच्ची-खुद को कमतर आंकने लगे।खाना बहुत कम या ज्यादा खाने लगे। लोगों से मिलना-जुलना कम कर दे। हर समय अपनी फोटो को लेकर परेशान रहे। लगातार उदास या चिड़चिड़ी रहने लगे। सोशल मीडिया के बिना बेचैन महसूस करे। तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए। जरूरत पड़े तो चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट या काउंसलर की मदद लेना बेहतर है। अंत में यही कहूंगी कि आपकी बेटी को इस समय सबसे ज्यादा जरूरत 'परफेक्ट दिखने' की नहीं, बल्कि यह महसूस करने की है कि वह जैसी है, वैसी ही प्यार, सम्मान और स्वीकार्यता की हकदार है। जब घर से उसे भरोसा, भावनात्मक सुरक्षा और बिना शर्त प्यार मिलेगा, तो धीरे-धीरे वह खुद को दूसरों से तुलना करने की बजाय अपनी खूबियों को पहचानना सीख जाएगी। याद रखिए, बच्चों का आत्मविश्वास एक दिन में नहीं बनता। यह रोज की छोटी-छोटी बातचीत, सपोर्ट और स्वीकार्यता से मजबूत होता है।

धर्मेंद्र ने पकड़ी कॉलर तो राजकुमार ने छोड़ी फिल्म, बप्पी लाहिड़ी को देखकर बोले मंगलसूत्र भी पहन लो, अमिताभ के सूट को पर्दा कहा

मुंबई। 'ये कौन हैं?' सलमान खान का सवाल सुनते ही जवाब आया- 'जानीष्ठ, अपने अब्बा से जाकर पूछना, हम कौन हैं।' यही थे राजकुमार। वो अभिनेता, जो फ्लॉप फिल्म के बाद भी अपनी फीस बढ़ा

देते थे। कहते थे- 'मेरी पिक्चर चले न चले, मैं फेल नहीं हुआ। कभी बप्पी लाहिड़ी के गहने पहनने का सरेआम मजाक बना देते थे, तो कभी गोविंदा जैसे कलाकारों की शर्ट काटकर रूमाल बना लेते थे। बेबाकी और हाजिर जवाबी ऐसी थी कि बड़े-बड़े कलाकार भी इनके सामने बोलने से कतराते थे। और हुनर और खौफ ऐसा कि रजनीकांत जैसे सुपरस्टार भी एक दौर में इनके साथ फिल्म करने से झिझकते थे। 'हम तुम्हें मारेंगे और जरूर मारेंगे, लेकिन वो बंदूक भी हमारी होगी, गोली भी हमारी होगी और वक्त भी हमारा होगाष्ठ.' (फिल्म- सौदागर, 1991) 'हम तुम्हें वो मौत देंगे, जो न किसी कानून की किताब में लिखी होगी और न ही कभी किसी मुजरिम ने सोची होगीष्ठ' (फिल्म- तिरंगा, 1992) राजकुमार के ये डायलॉग भी उनकी रौबदार पर्सनैलिटी और भारी आवाज को मद्देनजर रखते हुए ही लिखे गए थे। लेकिन अफसोस की जिस आवाज ने लाखों दिलों पर राज किया, वही आवाज आखिरी दिनों में नासूर बन गई। गले के कैंसर के चलते 1996 में उनका निधन हो गया। राजकुमार का मानना था कि मौत एक निजी मामला है, यही वजह है कि उन्होंने बीमारी और मौत राज रखने की आखिरी इच्छा जाहिर की। आज राजकुमार को गुजरे 30 साल हो चुके हैं। उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर पढ़िए उनकी बेबाकी, रौबदार पर्सनैलिटी के वो किस्से जो उनके व्यक्तित्व को समझने में मदद करते हैं-किस्सा-1-पार्टी में अमिताभ बच्चन के सूट की कर दी पर्दे से तुलना-60 के दशक में राजकुमार करियर के शिखर पर थे। जितनी उनके अभिनय की तारीफ होती थी, उससे कहीं ज्यादा चर्चा उनके बड़बोलेपन की होती थी। हर कोई उनके सामने ज्यादा बाद करने से कतराते थे। एक समय ऐसा था, जब अमिताभ बच्चन फिल्मों में नए-नए आए थे। दोनों की मुलाकात एक पार्टी में हुई। अमिताभ ने पार्टी में विदेशी थ्री पीस सूट पहना था। राजकुमार पास आए और पूछा, सूट कहां से सिलवाया। अमिताभ को लगा वो तारीफ कर रहे हैं, तो उन्होंने झट से पता बताना चाहा, लेकिन आगे राजकुमार ने सूट को ऊपर से नीचे देखते हुए कहा- मुझे भी पर्दे सिलवाने हैं। अमिताभ बच्चन इस बेइज्जती पर कुछ कह नहीं सके और मुस्कुराकर वहां से निकल गए। किस्सा- 2-गोविंदा की तोहफे में दी हुई शर्ट काटकर बना लिया रूमाल-गोविंदा ने करियर की शुरुआत में राजकुमार के साथ 1989 की फिल्म जंगबाज में काम किया था। एक दिन सेट पर राजकुमार ने गोविंदा को देखकर कहा- तुम्हारी शर्ट बहुत शानदार है। गोविंदा, राजकुमार जैसे बड़े स्टार से तारीफ मिलने से बेहद खुश हो गए। उन्होंने झट से कहा- सर, आपको ये शर्ट पसंद आ रही है, तो आप इसे रख लीजिए। गोविंदा ने तुरंत शर्ट उतारकर राजकुमार को दे दी। गोविंदा जैसे नए एक्टर के लिए ये बड़ी बात थी कि उन्होंने राजकुमार को तोहफे में शर्ट दी और राजकुमार उनकी दी हुई शर्ट कभी पहनेंगे। दो दिन बाद गोविंदा का दिल तब टूटा, जब राजकुमार ने उनकी दी हुई शर्ट काटकर रूमाल बना लिया था। ये किस्सा डायरेक्टर मेहुल कुमार ने एक इंटरव्यू में सुनाया। किस्सा- 3-मिथुन चक्रवर्ती को देखकर प्रोड्यूसर से कहा- किस स्ट्रगलिंग एक्टर को उठा लाए-मिथुन चक्रवर्ती को 80 के दशक में उस दौर के स्टार राजकुमार के साथ फिल्म गोलियों के बादशाह में छोटा सा रोल मिला था। राजकुमार का रवैया नए एक्टर्स के साथ उस समय ठीक नहीं था। शूटिंग के पहले ही दिन जब मिथुन कॉस्ट्यूम पहनकर तैयार हुए, तो उन्हें देख राजकुमार ने डायरेक्टर से कहा- माना कि रोल छोटा है, लेकिन इसके लिए आप किसी स्ट्रगलिंग एक्टर को क्यों ले आए। किसी अच्छे एक्टर को लेना था, ये किसे उठा लाए। मिथुन को ये बात काफी बुरी लगी। वो सीधे राजकुमार के पास गए और कहा- जिस स्ट्रगलिंग एक्टर की आप बात कर रहे हैं, वो मैं ही हूं। मिथुन को देख राजकुमार हंस पड़े और कहा- तुम यहां कहां आ गए एक्टिंग करने। ये कोई बच्चों का खेल नहीं है। इस पर मिथुन ने कहा- जानता हूं कि ये बच्चों का खेल नहीं है। मैं 7 साल से एक्टिंग कर रहा हूं। एक दिन मैं भी बड़ा एक्टर बनूंगा। ये सुनकर राजकुमार फिर हंसे और कहा- कोई छोटा-मोटा रोल चाहिए हो तो बताना। किस्सा- 4-बप्पी लाहिड़ी के गहने देख कहा- मंगलसूत्र भी पहन लेते-लीजेंड्री सिंगर बप्पी लाहिड़ी सोने के भारी गहने पहनने के लिए भी मशहूर थे। एक दिन एक पार्टी में राजकुमार की बप्पी दा पर नजर पड़ गई। जब बप्पी उनसे मिलने करीब गए, तो राजकुमार ने ऊपर से नीचे देखकर कहा- ''वाह, शानदार! एक से एक गहने पहने हो, सिर्फ मंगलसूत्र की कमी रह गई है, वो भी पहन लेते। किस्सा- 5-सलमान पहचान नहीं सके तो कहा- अपने अब्बा से पूछो हम कौन हैं-1989 में सलमान खान की फिल्म मैंने प्यार किया सुपरहिट रही। प्रोड्यूसर सूरज बड़जात्या ने एक पार्टी रखी, जिसमें राजकुमार भी पहुंचे। बड़जात्या के लिए ये फख्र की बात थी। वो तुरंत सलमान खान को राजकुमार से मिलवाने ले गए, लेकिन कामयाबी की खुशी में सलमान उन्हें पहचान नहीं सके। सलमान ने ठंडी प्रतिक्रिया दी और फिर दबे शब्दों में सूरज बड़जात्या से पूछा- ये कौन हैं। ये बात राजकुमार ने सुन ली और खुद जवाब देकर कहा- घर जाकर अपने अब्बा से जाकर पूछना, हम कौन हैं, फिर पता चलेगा। पास खड़े सूरज बड़जात्या ये सुनते ही सलमान को एक किनारे ले गए और राजकुमार के बारे में बताया। सलमान को तुरंत गलती का एहसास हुआ और उन्होंने दोबारा राजकुमार के पास आकर माफी मांगी। किस्सा- 6-कॉमेडियन को ज्यादा डायलॉग मिले तो भड़क गए राजकुमार, खुद बोल डाले सारे डायलॉग-1971 में रिलीज हुई फिल्म मर्यादा में राजकुमार को एक दयालु व्यक्ति की भूमिका मिली। फिल्म में दिखाया जाना था कि उन्होंने नौकर की मां के इलाज के लिए पैसे दिए और मां ठीक हो गईं। नौकर का किरदार कॉमेडियन मोहन चोटी को दिया गया था। सीन के मुताबिक मोहन चोटी को कहना था, मालिक आपने मुझे मां के इलाज के लिए पैसे दिए थे, मां बिल्कुल ठीक हो गई है। मैं आपका ये एहसान कैसे उतारूंगा। मालिक क्या मैं आपके नहाने के लिए पानी गर्म कर दूं। सेट पर रिहर्सल शुरू हुई। मोहन चोटी ने जैसे ही ये डायलॉग कहा, राजकुमार भड़क गए और कहा- अब हमारे ऐसे दिन आ गए कि ये मोहन चोटी बोलेगा और हम सुनेंगे। कुछ देर बाद जैसे ही एक्शन बोला गया, मोहन चोटी के डायलॉग बोलने से पहले ही राजकुमार ने खुद पूरे डायलॉग बदल दिए और कहा, मोहन इधर आओ, हमने तुम्हारी मां के इलाज के लिए रुपया दिया था, सुना है तुम्हारी मां बिल्कुल ठीक हो गई। अरे भाई, एहसान मानने की बात नहीं है, ये हमारा फर्ज था। अब खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो, जाओ मेरे नहाने के लिए पानी गर्म करो। किस्सा- 7-साधना के घर पर खाने से किया इनकार, कहा- खाना खाते हैं, लेकिन कुछ भी नहीं खा लेते- राजकुमार ने 70 के दशक में फिल्म उल्फत में काम किया, जिसमें उनकी को-स्टार वहीदा रहमान और साधना थीं। एक दिन शूटिंग खत्म कर साधना ने राजकुमार और दूसरे एक्टर्स को डिनर पर इनवाइट किया। राजकुमार पहुंचे और खाना निकला। सभी खाना खा रहे थे, लेकिन राजकुमार खामोश बैठे थे। साधना ने उनसे कहा- राज साहब खाना खाइए।राजकुमार ने कहा- नहीं, आप खाइए। साधना ने फिर कहा- कुछ तो खाइए। थोड़ा सा ही खा लीजिए। राजकुमार ने फिर कहा- नहीं आप लोग ही खाइए।साधना ने झिझकते हुए कहा- आप खाना तो खाते ही होंगे। इस पर राजकुमार ने अपने स्टाइल में कहा- जानीष्ठ, खाना तो हम खाते हैं, लेकिन इसका मतलब ये नहीं की कहीं भी कुछ भी खा लें। किस्सा- 8-लड़की को छेड़ने वाले शख्स को इतना पीटा, हो गई मौत-8 अक्टूबर 1926 को राजकुमार का जन्म ब्रिटिश इंडिया के बलूचिस्तान में हुआ। उनका असली नाम कुलभूषण पंडित था। 1940 के दशक के अंत में (लगभग 1948-49 में) राजकुमार की बॉम्बे पुलिस में सब इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्ति हुई। कद-काठी और गौरी रंगत देख, दोस्त अक्सर उन्हें फिल्मों में जाने का सुझाव देते थे। इसी समय उन्हें राज कपूर ने फिल्म आवारा ऑफर की, जो राजकुमार ने ठुकरा दी। एक दिन छुट्टी होने पर राजकुमार एक दोस्त और उसकी गर्लफ्रेंड के साथ जुहू में सैर कर रहे थे। तभी कुछ आवारा लड़कों ने दोस्त की गर्लफ्रेंड को छेड़ दिया। इस बात से राजकुमार आगबबूला हो गए और एक लड़के की इस कदर पिटाई की कि उसकी वहीं मौत हो गई। राजकुमार पर हत्या के आरोप लगे। रजा मुराद के पिता राजकुमार के दोस्त थे, तो वो अक्सर हर सुनवाई में साथ जाते थे। लंबे समय बाद राजकुमार को केस से बरी कर दिया गया। कुछ समय बाद दोस्त की जिद पर राजकुमार ने एक फोटोशूट करवाया, जिसकी बदौलत उन्हें 1952 की फिल्म रंगीली मिल गई। ये फिल्म खास नहीं चली, लेकिन राजकुमार को लगातार फिल्में मिलने लगीं। 1957 की फिल्म मदर इंडिया से राजकुमार को पहचान मिली और आगे वक्त, ऊंचे लोग, हमराज, नील कमल हीर रांझा जैसी फिल्मों ने उन्हें स्टार बना दिया। किस्सा-9-फिल्म ठुकराने पर राज कपूर ने सरेआम कहा-हत्यारा, जवाब से बंद की बोलती-समय के साथ राज कुमार को बड़ी-बड़ी फिल्में मिलने लगीं, लेकिन सालों पहले आवारा ठुकराने पर राज कपूर को हमेशा वो खटकते रहे। एक ही इंडस्ट्री की दो अहम शख्सियत होने के बावजूद दोनों की कभी बात नहीं हुई। सालों बाद प्रेम चोपड़ा की शादी की पार्टी में दोनों आमना-सामना हुआ। राज कपूर को पुराने जख्म याद आ गए। पार्टी में राज कपूर ने खूब शराब पी और नशे में राजकुमार को खरी-खोटी सुनाना शुरू कर दिया। बहस में बात इतनी बढ़ गई कि राज कपूर ने चिल्लाते हुए राज कुमार से कहा- तुम हत्यारे हो। राजकुमार ने जवाब में कहा- 'बेशक मैं हत्यारा हूं, लेकिन मैं आपके पास काम मांगने नहीं आया था, बल्कि आप मेरे पास फिल्म का ऑफर लेकर आए थे।' किस्सा- 10-दिलीप कुमार ने थप्पड़ मारा तो 33 साल नहीं की बात-इस फिल्म के ठीक एक साल बाद उनकी फिल्म पैगाम रिलीज हुई, जिसमें उन्होंने दिलीप कुमार के बड़े भाई का रोल किया। एक सीन के लिए दिलीप कुमार को उन्हें थप्पड़ मारना था। एक्शन सुनते ही दिलीप कुमार ने पूरी ताकत से राजकुमार के गाल पर थप्पड़ मारा, जो उन्हें तेजी से लगा। राजकुमार, जिनके सामने लोग बोलने से भी कतराते थे, थप्पड़ पड़ते ही हिल गए। उन्होंने मान लिया कि दिलीप कुमार ने जानबूझकर ऐसा किया और दिलीप कुमार से दोस्ती खत्म कर दी। दोनों की 33 सालों तक बात बंद रही। दोनों ने इंडस्ट्री में एक-दूसरे को कड़ी टक्कर दी। 33 साल बाद सुभाष घई ने दोनों की सुलह करवाई। दरअसल, फिल्म सौदागर की स्क्रिप्ट जब सुभाष घई ने दिलीप कुमार और राजकुमार के मुताबिक ही लिखी थी। जब दिलीप कुमार को फिल्म के लिए कॉल किया गया, तो उन्हें कहानी पसंद आई।

लेकिन उन्होंने फिल्म करने की शर्त रखते हुए सुभाष घई से कहा था- शूटिंग के दौरान राजकुमार को संभालने की जिम्मेदारी आपको ही लेनी पड़ेगी। फिर जब सुभाष ने इसकी कहानी राजकुमार को सुनाई। जब ये बात उन्हें पता चली कि दिलीप कुमार इस फिल्म का हिस्सा हैं, तो वो बहुत खुश हुए। उन्होंने ये भी कहा- जानी, मैं इस इंडस्ट्री में अपने बाद किसी को बेहतर एक्टर मानता हूं, तो वो सिर्फ दिलीप कुमार ही हैं। किस्सा- 11-फिरोज खान ने कहा- आप मुझे मत सिखाइए, अगले दिन कहा- अकड़ बरकरार रखा-1965 की फिल्म ऊंचे लोग में राजकुमार के साथ फिरोज खान ने काम किया था। उस वक्त फिरोज इंडस्ट्री में नए आए थे। शूटिंग के पहले दिन राजकुमार उनके पास गए और कहा- देखो ये तुम्हारी पहली फिल्म है। फिल्म को बहुत परफेक्शन के साथ करना। हालांकि, मैं बीच-बीच में तुम्हें सिखाता रहूंगा। अभी उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि फिरोज खान बोल पड़े- आप मुझे मत सिखाइए। मैं अपना काम अच्छे से कर लूंगा। सेट पर मौजूद लोग ये देखकर डर गए कि कहीं राजकुमार फिल्म छोड़कर ना चले जाएं। हालांकि, ऐसा हुआ नहीं। अगले दिन खुद राजकुमार फिरोज खान के पास गए और कहा- ये अकड़ तुम्हारी अच्छी है, इसे हमेशा बरकरार रखना। किस्सा- 12-रजनीकांत, नसीरुद्दीन शाह ने कर दिया साथ काम करने से इनकार-राजकुमार की रौबदार पर्सनैलिटी के चलते कई बड़े-बड़े एक्टर उनके साथ काम करने से कतराते थे। यही वजह थी कि जब रजनीकांत को राजकुमार के साथ फिल्म तिरंगा मिली, तो उन्होंने डायरेक्टर मेहुल कुमार को कॉल कर रहा, मेहुल जी, मुझे एक ही प्रॉब्लम है- राज साहब के साथ कैसे काम कर पाऊंगा। कुछ सेट पर टेंशन हो गई, तब क्या करूंगा। मुझे माफ कर दो।' जब मेहुल कुमार ने नसीरुद्दीन शाह को फिल्म ऑफर की तो जवाब मिला- मेहुल भाई आपके साथ मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है। लेकिन राज साहब के साथ तो काम करने से रहा। आखिरकार ये फिल्म नाना पाटेकर को दी गई। नाना पाटेकर ने फिल्म करने की शर्त रखी- राज साहब सेट पर इंटरफेयर करेंगे, तब मैं सेट छोड़कर चला जाऊंगा। एक दिन राजकुमार ने मेहुल कुमार को कॉल कर पूछा- ये फिल्म कौन कर रहा है। जवाब मिला- नाना पाटेकर। इस पर राजकुमार ने कहा- 'अरे मेहुल! उसका दिमाग बहुत खराब रहता है। सुना है कि वह सेट पर गाली-गलौज कर देता है।' इस कास्टिंग पर फिल्म इंडस्ट्री के हर शख्स ने कहा कि मेहुल कुमार कभी ये फिल्म पूरी नहीं कर सकेंगे, क्योंकि दोनों ही एक्टर गुस्से के तेज हैं। लेकिन सेट पर दोनों ने बेहतरीन ढंग से तालमेल मिलाया और फिल्म 6 महीने में बनकर तैयार हो गई। किस्सा- 13-स्टार बन चुकीं जीनत अमान से कहा- फिल्मों में काम क्यों नहीं करतीं-राजकुमार, बेबाकी के अलावा अपने ह्यूमर के लिए भी मशहूर थे। 70 के दशक में हरे रामा हरे कृष्णा जैसी बेहतरीन फिल्में करते हुए जीनत अमान स्टार बन चुकी थीं। एक दिन उनकी मुलाकात राजकुमार से हुई। राजकुमार उनके पास पहुंचे और स्टाइल मारते हुए कहा, जीनत, तुम बहुत सुंदर हो। तुम फिल्मों में काम करने की कोशिश क्यों नहीं करतीं। ये सुनते ही वहां मौजूद लोग हंस पड़े। किस्सा- 14-धर्मेंद्र ने कॉलर पकड़ी, तो फिल्म अधूरी छोड़कर सेट से चले गए-फिल्म काजल की शूटिंग के पहले दिन राजकुमार ने धर्मेंद्र को देखकर कहा- जानी, फिल्म की शूटिंग के लिए हीरो चाहिए था, कोई पहलवान नहीं। ये सुनकर धर्मेंद्र बहुत गुस्सा हुए, लेकिन उन्होंने बहुत अदब के साथ कहा कि वो उनका मजाक ना बनाएं। फिर भी राजकुमार नहीं माने तो धर्मेंद्र ने उनकी कॉलर पकड़ ली। ये देखकर सेट पर मौजूद सभी लोग हैरान रह गए। बाद में ये फिल्म राजकुमार के बिना ही पूरी हुई। किस्सा- 15-पालतु कुत्ते ने जवाब नहीं दिया, तो रामानंद सागर से कहा- कुत्ता नहीं माना तो मैं रोल कैसे करूं-1968 में रामानंद सागर फिल्म आंखें बना रहे थे। वो स्क्रिप्ट लेकर राजकुमार के पास पहुंचे। राजकुमार का मूड उस दिन ठीक नहीं था। उन्होंने अपने पालतू कुत्ते को पास बुलाया और पूछा- क्या तुम इस फिल्म में काम करोगे। कुत्ता शांत खड़ा रहा। इस पर राजकुमार ने रामानंद सागर से कहा- जब मेरा कुत्ता भी इस रोल के लिए तैयार नहीं है, तो मैं भला इसे कैसे कर सकता हूं। रामानंद सागर नाराज होकर वहां से निकल गए और फिर धर्मेंद्र को कास्ट कर लिया।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।